नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 04, अंक 191, नई दिल्ली, शुक्रवार 16 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



● 03 "नवरात्र में क्यों जलाते हैं अखंड ज्योत"
● 06 # हर भाषा के लुप्त होने से एक संसार मिट जाता है
● 08 शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं – छठी देवी मां कात्यायनी माता

वाह रे डिजिटल इंडिया! — प्रदूषण मशीन से नहीं, OTP से तय

PUC, 'No PUC No Fuel' और OTP-राज — जब तकनीक सुविधा नहीं, सजा बन जाए

लेखः- संजय कुमार बाठला

मुख्य तथ्य एक नजर में:

- PUC अनिवार्य है, लेकिन OTP अनिवार्य नहीं — यह कानून में नहीं, सिस्टम (VAHAN / PUCC 2.0) में है।

- बिना PUC के चालान ₹10,000, लाइसेंस 3 माह निलंबन और 6 माह तक कैद का प्रावधान है — इसलिए OTP न मिलना सिर्फ तकनीकी अड़चन नहीं, आर्थिक दंड का कारण बन गया है।

- दिल्ली में 1 अक्टूबर 2026 से 'No PUC, No Fuel' लागू — CAQM Direction No. 101 के तहत।

1. PUC का कानून क्या कहता है?

1. मोटर वाहन अधिनियम, 1988

- धारा 190(2): प्रदूषण मानकों का उल्लंघन करने पर — पहली बार ₹10,000 तक जुर्माना, लाइसेंस 3 माह तक निलंबन, 6 माह तक कारावास या दोनों। दिल्ली सरकार ने 1 अक्टूबर 2026 के प्रवर्तन अभियान में इसी प्रावधान के तहत ₹10,000 चालान की घोषणा की है।

- धारा 177, 182: सामान्य उल्लंघन और नियमों की अवज्ञा पर जुर्माना। 90b3

2. केंद्रीय मोटर वाहन नियम (CMVR), 1989 — नियम 115 और 116

- नियम 115(7): पंजीकरण के 1 वर्ष बाद हर वाहन को राज्य सरकार द्वारा अधिकृत एजेंसी से जारी वैध PUC रखना होगा। BS-IV/BS-VI वाहनों के लिए 12 माह, अन्य के लिए 6 माह वैधता।

- नियम 115(2): उत्सर्जन मानक — CO, HC का परीक्षण मशीन से होगा।

- नियम 116: अधिकारी को संदेह हो तो 7 दिन में पुनः परीक्षण का निर्देश दे सकता है, न करने पर धारा 190(2) के तहत दंड। 9496

3. राजपत्रित अधिसूचनाएं

- G.S.R. 527(E), 06-06-2018: PUC डेटा का VAHAN डेटाबेस से लिंकेज।



- G.S.R. 410(E), 14-06-2021: PUCC का पूरे देश में एक समान प्रारूप।

- MoRTH Advisory 2021: हर पेट्रोल पंप पर PUC केंद्र, मशीनों का कैलिब्रेशन, प्री-पेमेंट, मोबाइल टेस्टिंग केंद्र। 9496

महत्वपूर्ण: इनमें से किसी भी राजपत्रित अधिसूचना में OTP को PUC जारी करने की शर्त नहीं बनाया गया है। OTP, NIC के PUCC Version 2.0 एप्लीकेशन में पारदर्शिता और फर्जी PUC रोकने के लिए जोड़ा गया एक प्रशासनिक/तकनीकी कदम है। इसीलिए कानूनी सवाल उठता है — क्या एक कार्यकारी सिस्टम, बिना संसद द्वारा पारित कानून या राजपत्रित संशोधन के, नागरिक के विधिक अधिकार को OTP पर निर्भर कर सकता है?

2. संविधान और न्यायिक सिद्धांत — जनता का पक्ष

- अनुच्छेद 14 — समानता का अधिकार: OTP न मिलने पर एक ही प्रदूषण मानक पर खरा वाहन एक मालिक को मिल जाता है और दूसरे को नहीं — यह मनमानी (Arbitrariness) है।

- अनुच्छेद 19(1)(g) — व्यवसाय और आवागमन का अधिकार: टैक्सी, ऑटो, ट्रक चालक का PUC न बनना उसकी आजीविका पर सीधा प्रहार है। दिल्ली में ही 38.51 करोड़ वाहन VAHAN पर हैं, 5.34 करोड़ ही वैध PUCC धारक थे (30 नवंबर 2024 तक) — बड़ी संख्या OTP/रिकॉर्ड की खामियों से भी जुड़ी है।

- अनुच्छेद 21 — जीवन और स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार: M.C. Mehta बनाम भारत संघ (1986, 1998, 2018) में सर्वोच्च न्यायालय ने स्वच्छ हवा को अनुच्छेद 21 का हिस्सा माना, पर साथ ही प्रक्रियात्मक निष्पक्षता पर भी जोर दिया। प्रदूषण रोकना राज्य का कर्तव्य है, लेकिन नागरिक को बिना दोष के दंडित करना अनुच्छेद 21 का उल्लंघन है।

- अनुच्छेद 21 + डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023 (DPDP Act): वाहन मालिक का मोबाइल नंबर व्यक्तिगत डेटा है। VAHAN में मोबाइल अपडेट के लिए आधार-लिंक की शर्त — KS Puttaswamy (2017) निजता के अधिकार के तहत आनुपातिकता (Proportionality) की परीक्षा में आती है। उद्देश्य फर्जी PUC रोकना है, पर साधन — पुराने मालिक के OTP के बिना PUC रोके रखना — आनुपातिक नहीं है।

- वायु (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 — धारा 20: राज्य सरकार को वाहनों के उत्सर्जन मानक लागू करने की शक्ति देती है, पर यह शक्ति भी तकनीकी परीक्षण पर आधारित है, मोबाइल नंबर की उपलब्धता पर नहीं।

- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 और CAQM अधिनियम, 2021: CAQM को NCR में प्रदूषण नियंत्रण के निर्देश देने की शक्ति है। उसी के तहत Direction No. 101 — 'No PUC, No Fuel' लागू हुआ, जिसके तहत दिल्ली-NCR में 1 अक्टूबर 2026 से बिना वैध PUC के ईंधन नहीं मिलेगा, ANPR कैमरों से सत्यापन होगा। f8b519af

3. जनता परेशान क्यों है? — ज़मीनी हकीकत गुरुग्राम, यूपी और दिल्ली से रिपोर्ट:

>"OTP सिर्फ RC में दर्ज मोबाइल नंबर पर जाता है। 75% वाहनों में नंबर पुराना, बंद या पिछले मालिक का है।" — PUC ऑपरेटर्स एसोसिएशन, यूपी d6e8

"कमर्शियल और सरकारी वाहनों के RC में अधिकारी का नंबर है, ड्राइवर का नहीं। पहले कोई भी सक्रिय नंबर देकर प्रमाणपत्र बन जाता था, अब OTP के लिए अधिकृत व्यक्ति को ढूंढना पड़ता है" — गुरुग्राम PUC संचालक 5d31

मुख्य समस्याएं:

- सेकंड-हैंड वाहन: खरीदार ने गाड़ी ली, RC ट्रांसफर लंबित है, OTP पुराने मालिक को जाता है। पुराना मालिक विदेश में, बीमार या संपर्क से बाहर है।

- कंपनी/सरकारी वाहन: RC में संस्था के अधिकारी का नंबर, वाहन चालक कोई और।

- नंबर बंद/खोया: मोबाइल खो गया, नंबर बदल गया — तो VAHAN में अपडेट के लिए RTO जाना पड़ेगा, जो कई दिन लेता है। इस बीच PUC समाप्त और ₹10,000 का चालान।

- तकनीकी विफलता: OTP सर्वर देरी, नेटवर्क समस्या — मशीन कहती है गाड़ी पास है (CO 0.32, HC 012), सिस्टम कहता है OTP नहीं आया।

4. दिल्ली परिवहन विभाग और MoRTH की जवाबदेही

- MoRTH PUC का राष्ट्रीय ढांचा बनाता है, दिल्ली परिवहन विभाग PUC केंद्रों को अधिकृत करता है और दिल्ली में 900+ केंद्र चलाता है।

- दिल्ली का नियम: PUC शुल्क ₹100 (दिल्ली परिवहन विभाग शर्तें) — बिना OTP के प्रमाणपत्र न मिलने पर नागरिक को बार-बार केंद्र के चक्कर लगाने पड़ते हैं, शुल्क और समय दोनों की बर्बादी।

- 'No PUC, No Fuel' में दोहरी मार: OTP न मिलने से PUC नहीं, PUC न होने से ईंधन नहीं, ईंधन न मिलने से वाहन खड़ा — फिर भी चालान का भय।

5. संपादकीय मांग — 7 बिंदु

1. वैकल्पिक सत्यापन: RC-धारक के अलावा, चालक/स्वामी के आधार-लिंक मोबाइल, e-KYC, फेस-ऑथेंटिकेशन या PUC केंद्र पर उपस्थित व्यक्ति के पहचान पत्र से भी सत्यापन की अनुमति हो।

2. 15 दिन का ग्रेस पीरियड: OTP न मिलने पर मशीन से पास गाड़ी को अस्थायी/प्रोविजनल PUC (7-15 दिन) दिया जाए, ताकि चालान न हो।

3. VAHAN में ऑन-स्पॉट मोबाइल अपडेट: PUC केंद्र पर ही आधार OTP से मोबाइल अपडेट की सुविधा, बिना RTO जाए।

4. राजपत्रित अधिसूचना में स्पष्टता: यदि OTP को अनिवार्य बनाना है तो CMVR 115/116 में संशोधन कर राजपत्र में प्रकाशित किया जाए, ताकि नागरिक को न्यायालय में चुनौती का आधार मिले।

5. जुर्माने में आनुपातिकता: मशीन से पास लेकिन OTP के कारण PUC न बन पाने वाले को धारा 190(2) का अधिकतम दंड न दिया जाए।

6. PUC केंद्रों का ऑडिट: मशीन कैलिब्रेशन और OTP सिस्टम की मासिक रिपोर्ट सार्वजनिक हो।

7. हेल्पलाइन और अपील: दिल्ली परिवहन हेल्पलाइन और परिवहन आयुक्त को शिकायत का 72 घंटे में निपटान अनिवार्य हो।

निष्कर्ष प्रदूषण नियंत्रण से कोई इनकार नहीं करता। लेकिन प्रदूषण मशीन से मापा जाता है, मोबाइल के OTP से नहीं। जब सरकार डिजिटल इंडिया का नारा देती है, तो डिजिटल व्यवस्था को जनता की सुविधा के लिए होना चाहिए, जनता को लूटने, भटकाने और जुर्माना वसूलने का हथियार नहीं बनना चाहिए।

>PUC मशीन की जाँच से मिले, OTP की मेहरबानी से नहीं!

— संपादक, परिवहन विशेष



टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा



पिंकी कुंडू



सीमा सुरक्षा बल (SSB) ने सैनिकों को चेतावनी दी है कि वे अज्ञात कॉल, OTP अनुरोध, और संदिग्ध ऑनलाइन संपर्कों से दूर रहें, क्योंकि साइबर अपराधी हनी ट्रैप, फर्जी पहचान, मैलिशियस ऐप्स, और वित्तीय धोखाधड़ी तकनीकों का उपयोग करके रक्षा कर्मियों को निशाना बना रहे हैं। यह सलाह SSB साइबर सुरक्षा जागरूकता सप्ताह का हिस्सा है और कई सत्यापित रिपोर्टों पर आधारित है।

SSB ने यह सलाह क्यों जारी की

1. सैनिकों को निशाना बनाते ऑनलाइन हनी ट्रैप

साइबर अपराधी फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाकर दोस्ताना संपर्क का दिखावा करते हैं और धीरे धीरे विश्वास बनाते हैं। विश्वास बनने के बाद वे सैनिकों को निजी फोटो, वीडियो या संवेदनशील जानकारी साझा करने के लिए उकसाते हैं, जिसे बाद में ब्लैकमेल या इंटेलिजेंस संग्रह के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

2. संदिग्ध कॉल और OTP अनुरोधों के माध्यम से धोखाधड़ी

ठग अज्ञात नंबरों से सैनिकों को कॉल करके निम्न जानकारी निकालने की कोशिश करते हैं:

- OTP, PIN, पासवर्ड, बैंकिंग विवरण
- डिजिटल भुगतान के वेरिफिकेशन कोड
- सोशल मीडिया/मैसेजिंग ऐप्स के लॉग इन क्रेडेंशियल्स

SSB ने स्पष्ट कहा है कि OTP या PIN किसी भी स्थिति में साझा न करें, चाहे कॉल करने वाला बैंक, पुलिस या किसी सरकारी विभाग का दावा करे।

3. फर्जी वीडियो कॉल और भावनात्मक दबाव

स्कैमर्स संदिग्ध वीडियो कॉल शुरू करते हैं ताकि आपत्तिजनक दृश्य रिकॉर्ड कर सकें या दबाव की स्थिति बना सकें। इन कॉलों का उपयोग बाद में धन उगाही या संवेदनशील जानकारी निकालने के लिए किया जाता है।

4. मैलिशियस APK फाइलें और स्पायवेयर खतरे

सैनिकों को अज्ञात APK फाइलें डाउनलोड करने के लिए लिंक भेजे जा रहे हैं। ये फाइलें:

- स्पायवेयर इंस्टॉल कर सकती हैं
- संपर्क, फोटो और लोकेशन चुरा सकती हैं
- बैंकिंग विवरण कैप्चर कर सकती हैं
- आधिकारिक संचार उपकरणों को प्रभावित कर सकती हैं

SSB ने निर्देश दिया है कि ऐप्स केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही डाउनलोड करें।

5. वित्तीय धोखाधड़ी और QR कोड स्कैम

साइबर अपराधी उपयोग कर रहे हैं:

- फर्जी भुगतान अनुरोध
- नकली QR कोड
- फ़िशिंग लिंक
- धोखाधड़ी वाले संदेश जिनमें तत्काल वित्तीय आवश्यकता का दावा किया जाता है

इनका उद्देश्य बैंक खाते खाली करना या डिजिटल वॉलेट तक पहुंच प्राप्त करना है।

6. बड़े हमलों के लिए सैनिकों की प्रोफाइलिंग

अज्ञात कॉलों का उपयोग किया जाता है:

- सक्रिय नंबर की पुष्टि करने के लिए
- प्रतिक्रिया व्यवहार समझने के लिए
- संभावित लक्ष्य पहचानने के लिए

यह प्रोफाइलिंग अपराधियों को निम्न योजनाएँ बनाने में मदद करती है:

- SIM swap हमले
- फ़िशिंग अभियान
- ब्लैकमेल प्रयास
- सोशल इंजीनियरिंग ऑपरेशन

SSB द्वारा पहचाने गए प्रमुख जोखिम

- व्यक्तिगत और ऑपरेशनल जानकारी का लीक होना
- वित्तीय धोखाधड़ी का खतरा
- डिवाइस सुरक्षा से समझौता
- भावनात्मक दबाव और ब्लैकमेल
- सैनिकों को जासूसी संबंधित साइबर ऑपरेशन का लक्ष्य बनाना

🚫 सैनिकों को क्या नहीं करना चाहिए

- अज्ञात कॉल उठाना
- OTP/PIN/पासवर्ड साझा करना
- संदिग्ध वीडियो कॉल का जवाब देना
- अविश्वसनीय लिंक या QR कोड पर क्लिक करना
- अज्ञात स्रोतों से APK फाइलें डाउनलोड करना

📞 **रिपोर्टिंग प्रोटोकॉल**

SSB ने निर्देश दिया है कि किसी भी साइबर धोखाधड़ी प्रयास की तुरंत रिपोर्ट करें:

- राष्ट्रीय साइबर अपराध हेल्पलाइन: 1930
- सरकारी पोर्टल: cybercrime.gov.in

SSB की यह सलाह तेजी से बढ़ते साइबर खतरों से सैनिकों की सुरक्षा के लिए एक रोकथाम उपाय है। अज्ञात कॉल, OTP अनुरोध, फर्जी पहचान और मैलिशियस ऐप्स का उपयोग जासूसी, वित्तीय धोखाधड़ी और व्यक्तिगत शोषण के प्रवेश द्वार के रूप में किया जा रहा है। सतर्क रहकर, संचार की पुष्टि करके और जोखिमपूर्ण गतिविधियों से बचकर सैनिक अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा और राष्ट्रीय सुरक्षा दोनों को मजबूत कर सकते हैं।



स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

पित्त विकार - कारण, लक्षण एवं घरेलू उपाय (स्वास्थ्यवर्धक जानकारी)



पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

1. पित्त विकार होने के संभावित कारण

* चाय-कॉफी का अत्यधिक सेवन
* दिनभर पर्याप्त पानी न पीना
* कुछ दवाओं का दुष्प्रभाव
* नींद पूरी न होना और मानसिक तनाव
* समय पर भोजन न करना
* अधिक तीखा, तैलीय एवं मसालेदार भोजन करना
* बार-बार बाहर का खाना खाना
* कुछ लोगों में खट्टे पदार्थों या विशेष खाद्य पदार्थों से एसिडिटी बढ़ना

2. पित्त विकार के सामान्य लक्षण

* सीने या पेट में जलन
* जी मिचलाना
* उल्टी होना
* पेट में बेचैनी या भारीपन
* वचा पर लाल चकत्ते या खुजली होना
* चक्कर आना

ध्यान दें: ये लक्षण हमेशा पित्त के कारण ही नहीं होते। इनके पीछे एसिडिटी, एलर्जी, संक्रमण या अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ भी हो सकती हैं।

3. एसिडिटी से राहत पाने के लिए उपयोगी आदतें

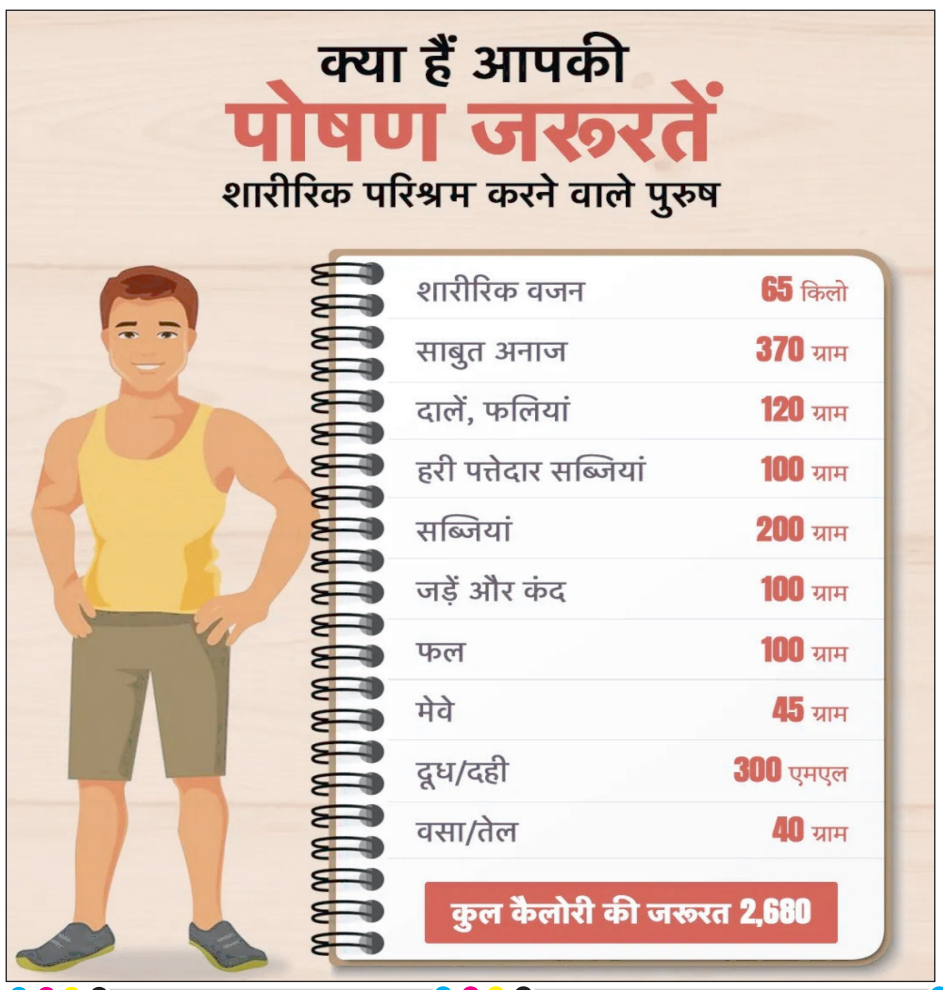
* पर्याप्त पानी पिएँ: दिनभर नियमित रूप से पानी पिएँ।
* समय पर भोजन करें: लंबे समय तक खाली पेट रहने से बचें।
* मसालेदार भोजन कम करें: ऐसे खाद्य पदार्थों से बचें जिनसे आपको जलन बढ़ती हो।
4. चाय-कॉफी सीमित करें: यदि इनके सेवन से एसिडिटी बढ़ती है, तो मात्रा कम करें।
5. सौंफ का सेवन: थोड़ी सौंफ चबाना कुछ लोगों को भोजन के बाद ताजगी दे सकता है, लेकिन इसे एसिडिटी का प्रमाणित उपचार न समझें।
6. दूध का सेवन: दूध कुछ समय के लिए राहत दे सकता है, लेकिन कुछ लोगों में इसकी वसा एसिडिटी बढ़ा सकती है।
7. पर्याप्त नींद लें: नियमित समय पर सोएँ और तनाव कम करने का प्रयास करें।
8. भोजन के बाद टहलें: हल्की सैर करें और भोजन के तुरंत बाद न लेटें।
9. संतुलित आहार लें: अपनी सहनशीलता के अनुसार फल, सब्जियाँ और अन्य पौष्टिक खाद्य पदार्थ शामिल करें।
4. कुछ जरूरी सावधानियाँ

* उल्टी होने पर अदरक, नींबू, नमक और शहद का मिश्रण हर व्यक्ति के लिए उपयुक्त नहीं होता।
* एंटीबायोटिक दवाएँ डॉक्टर की सलाह से ही लें। आवश्यक दवाएँ स्वयं बंद न करें।
* त्वचा पर लाल चकत्ते और खुजली होने पर इसे केवल पित्त मानकर नजरअंदाज न करें।
* लगातार उल्टी, खून की उल्टी, काला मल, तेज पेट दर्द या सीने में दर्द होने पर तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें।
5. एक विशेष जानकारी आयुर्वेद में पित्त को तीन दोषों में से एक माना गया है। वहीं, शरीर में पित्ताशय (Gallbladder) और पाचन से संबंधित पित्त रस की भी अलग भूमिका होती है।

* इन दोनों अवधारणाओं को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।
* एसिडिटी या त्वचा की समस्या होने का अर्थ यह नहीं है कि शरीर में पित्त की मात्रा निश्चित रूप से बढ़ गई है।

स्वस्थ जीवन के लिए संतुलित आहार, पर्याप्त नींद, नियमित व्यायाम और सही समय पर उचित उपचार महत्वपूर्ण हैं।

निरोगी शरीर, शांत मन और सकारात्मक विचार ही स्वस्थ एवं सुखी जीवन की आधारशिला हैं।



महिलाओं का स्वास्थ्य – परिवार की खुशियों का आधार! - हर महिला को अपने लिए समय जरूर निकालना चाहिए!

पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

महिलाओं के स्वास्थ्य के लिए 5 महत्वपूर्ण बातें!

1. संतुलित आहार

* आयरन के लिए हरी पत्तेदार सब्जियाँ, दालें और मूँगफली खाएँ
* कैल्शियम के लिए दूध, दही और रागी को आहार में शामिल करें।
* प्रोटीन के लिए दालें, अंकुरित अनाज और पौष्टिक खाद्य पदार्थ खाएँ।

2. रोजाना व्यायाम

* प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट पैदल चलें,
* योग करें या अपनी पसंद का व्यायाम करें।
* शरीर को सक्रिय रखें और
* तनाव कम करने के लिए पर्याप्त आराम करें।

3. नियमित स्वास्थ्य जाँच

* आवश्यकता के अनुसार हीमोग्लोबिन और अन्य रक्त जाँच करवाएँ।
* थायरॉइड या मासिक धर्म से जुड़ी परेशानी होने पर डॉक्टर से सलाह लें।
* उम्र के अनुसार जरूरी स्वास्थ्य जाँच समय पर करवाएँ।

4. मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें

* हर दिन अपने लिए थोड़ा समय निकालें।
* पर्याप्त नींद लें और तनाव को मन में दबाकर न रखें।
* जरूरत पड़ने पर परिवार या विशेषज्ञ से बात करें।

5. स्वस्थ आदतें अपनाएँ

* पर्याप्त पानी पिएँ और संतुलित आहार लें।
* तंबाकू और शराब से दूर रहें।
* डॉक्टर की सलाह के बिना अनावश्यक दवाएँ न लें।

महत्वपूर्ण सूचना: PCOD, PCOS या हार्मोन संबंधी समस्याओं के लिए स्त्री रोग विशेषज्ञ की सलाह लें। किसी भी हर्बल उत्पाद का उपयोग करने से पहले उसकी सुरक्षा और अन्य दवाओं के साथ संभावित प्रभावों के बारे में डॉक्टर से परामर्श करें।

हमेशा याद रखें!

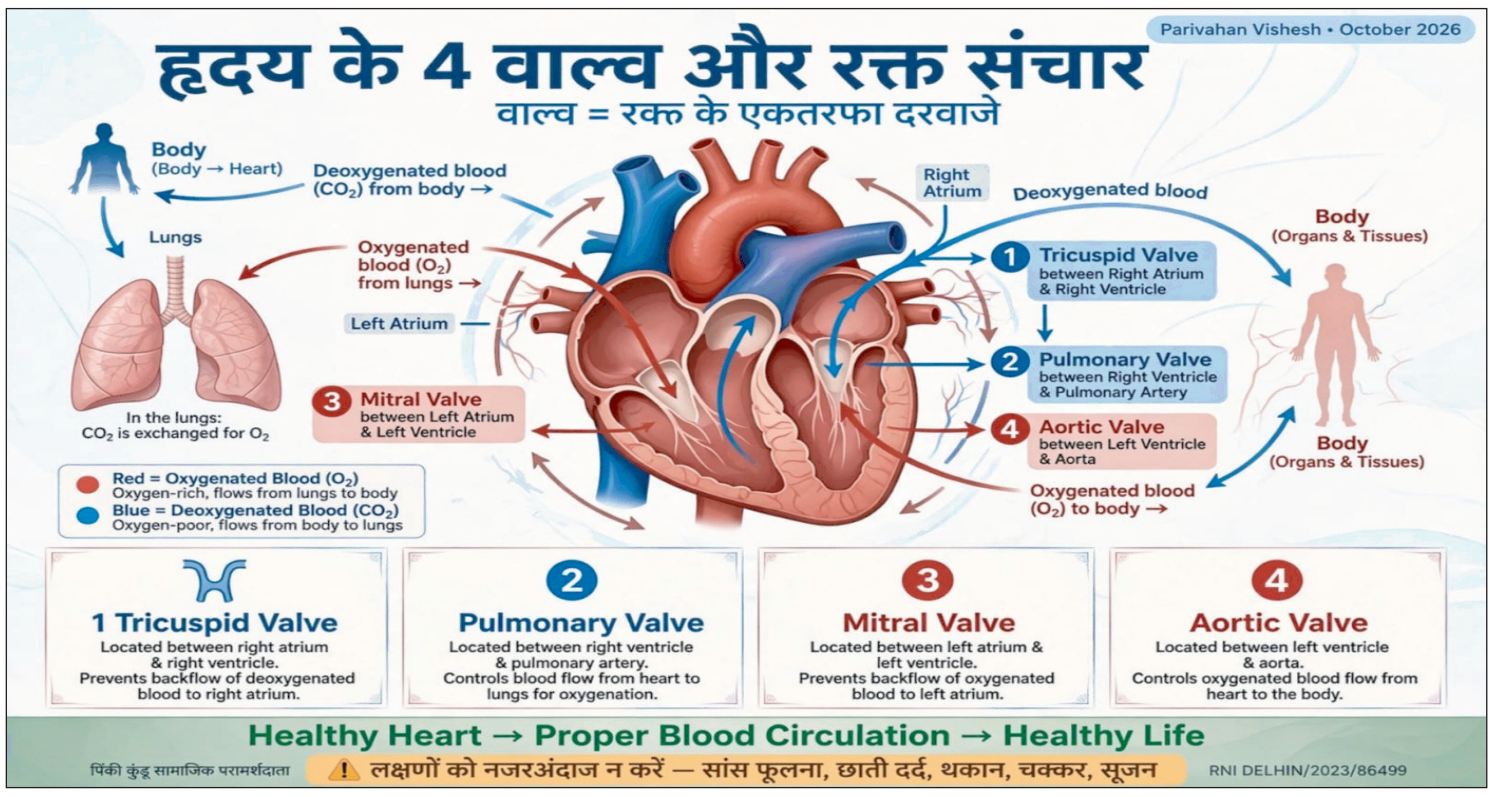
1. अपनी सेहत का ध्यान रखना स्वार्थ नहीं, बल्कि खुद से प्यार करना है!
2. स्वस्थ महिला = खुशहाल परिवार = सुंदर समाज!

महिलाओं के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, स्वयं खुश रहें और दूसरों को भी स्वस्थ जीवन जीने के लिए प्रेरित करें!



हृदय के 4 वाल्व और रक्त संचार की महत्वपूर्ण जानकारी

हृदय के Valves (वाल्व) यानी रक्त के एकतरफा दरवाजे!



पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

हमारा हृदय (Heart) दिन-रात बिना रुके काम करने वाला शरीर का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। हृदय का काम केवल रक्त पंप करना ही नहीं, बल्कि रक्त को सही दिशा में और सही समय पर आगे भेजना भी है।

हृदय में 4 प्रमुख वाल्व होते हैं। ये वाल्व घर के दरवाजों की तरह काम करते हैं।

* सही समय पर खुलते हैं।
* रक्त को आगे जाने देते हैं।
* सही समय पर बंद होकर रक्त को पीछे लौटने से रोकते हैं।

हृदय के 4 प्रमुख वाल्व कौन-कौन से हैं?

1. Tricuspid Valve (ट्राइकसपिड वाल्व) यह हृदय के दाएँ ऊपरी कक्ष (Right Atrium) से रक्त को दाएँ निचले कक्ष (Right Ventricle) में जाने देता है।

* जब दायाँ निचला कक्ष सिकुड़ता है, तो यह वाल्व बंद हो जाता है, जिससे रक्त वापस ऊपरी कक्ष में नहीं लौटता।

2. Pulmonary Valve (पल्मोनरी वाल्व) यह दाएँ निचले कक्ष (Right Ventricle) से रक्त को फेफड़ों (Lungs) की ओर जाने देता है।

* यह रक्त को वापस दाएँ निचले कक्ष में आने से रोकने में मदद करता है

3. Mitral Valve (माइट्रल वाल्व) यह फेफड़ों से ऑक्सीजन युक्त रक्त को हृदय के बाएँ ऊपरी कक्ष (Left Atrium) से बाएँ निचले कक्ष (Left Ventricle) में जाने देता है।

* जब बायाँ निचला कक्ष सिकुड़ता है, तो यह वाल्व बंद हो जाता है, जिससे रक्त वापस ऊपरी कक्ष में नहीं लौटता।

4. Aortic Valve (एओर्टिक वाल्व) यह बाएँ निचले कक्ष (Left Ventricle) से रक्त को महाधमनी (Aorta) के माध्यम से पूरे शरीर में जाने देता है।

* यह रक्त को वापस बाएँ निचले कक्ष में आने से रोकता है।

रक्त संचार (Blood Circulation) कैसे होता है? रक्त के संचार की प्रक्रिया को आसान भाषा में समझें:

* शरीर से ऑक्सीजन की कमी वाला रक्त
* हृदय का दायाँ भाग
* फेफड़े (Lungs) – यहाँ रक्त में ऑक्सीजन मिलती है।
* हृदय का बायाँ भाग
* पूरे शरीर में ऑक्सीजन युक्त रक्त का संचार

इस पूरी प्रक्रिया को रक्त परिसंचरण (Blood Circulation) कहते हैं।

हृदय का वाल्व खराब होने पर क्या हो सकता है? वाल्व ठीक से काम नहीं करने पर रक्त के प्रवाह में समस्या हो सकती है।

1. Stenosis (स्टेनोसिस) जब वाल्व पूरी तरह नहीं खुलता या संकरा हो जाता है, तो रक्त के आगे बढ़ने में रुकावट आती है।
2. Regurgitation (रिगर्जिटेशन) जब वाल्व ठीक से बंद नहीं होता, तो रक्त का कुछ हिस्सा वापस लौट सकता है।

ऐसी स्थिति में हृदय को रक्त पंप करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है।

इन लक्षणों को नजरअंदाज न करें!

यदि आपको निम्नलिखित लक्षण दिखाई दें, तो डॉक्टर से परामर्श लें:

1. सांस फूलना या सांस लेने में परेशानी
2. छाती में दर्द या बेचैनी
3. असामान्य थकान या कमजोरी
4. चक्कर आना
5. बेहोशी होना
6. हृदय की धड़कन असामान्य रूप से महसूस होना
7. पैरों या टखनों में सूजन

यदि सीने में तेज या लगातार दर्द, गंभीर सांस की तकलीफ या बेहोशी हो, तो तुरंत आपातकालीन चिकित्सा सहायता लें।

हृदय और रक्त संचार को स्वस्थ रखने के लिए क्या करें?

1. नियमित व्यायाम करें प्रतिदिन अपनी क्षमता के अनुसार चलें और शारीरिक रूप से सक्रिय रहें।
2. संतुलित आहार लें फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज और पौष्टिक खाद्य पदार्थों को आहार में शामिल करें।
3. नमक का अधिक सेवन न करें अधिक नमक रक्तचाप बढ़ाने में योगदान दे सकता है।
4. वजन नियंत्रित रखें स्वस्थ वजन बनाए रखने का प्रयास करें।
5. रक्तचाप की नियमित जाँच करें उच्च रक्तचाप को नियंत्रित रखना हृदय के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है।
6. मधुमेह को नियंत्रित रखें यदि आपको डायबिटीज है, तो डॉक्टर की सलाह के अनुसार ब्लड शुगर नियंत्रित रखें।
7. धूम्रपान से बचें
8. पर्याप्त नींद लें
9. तनाव कम करने का प्रयास करें
10. नियमित स्वास्थ्य जाँच करवाएँ

महत्वपूर्ण जानकारी: नियमित व्यायाम हृदय और रक्त वाहिकाओं के समग्र स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। लेकिन व्यायाम करने से हृदय के वाल्व सीधे मजबूत हो जाते हैं या वाल्व की बीमारी ठीक हो जाती है, ऐसा दावा करना सही नहीं है।

एक बात हमेशा याद रखें!

1. Heart (हृदय) = शरीर का पंप
2. Blood Vessels (रक्त वाहिकाएँ) = रक्त के रास्ते
3. Valves (वाल्व) = रक्त को सही दिशा में बहने देने वाले एकतरफा दरवाजे

जब हृदय के वाल्व सही तरीके से खुलते और बंद होते हैं, तो रक्त उचित दिशा में प्रवाहित होता है। इससे शरीर की कोशिकाओं तक ऑक्सीजन और आवश्यक पोषक तत्व पहुँचाने में मदद मिलती है।

Healthy Heart → Proper Blood Circulation → Healthy Life!

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में स्वस्थ जीवन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसलिए आत्मा की शुद्धि के साथ-साथ शरीर के स्वास्थ्य और स्वच्छता का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

स्वस्थ रहें, जागरूक रहें और दूसरों को भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक बनाएँ!?

"नवरात्र में क्यों जलाते हैं अखंड ज्योत"



Ms. Aanchal Agarwal
Working as PRT in one of the renowned school of Delhi Done PGDM in IT & HR, M.COM., B.Ed.

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



नवरात्र यानि नौ दिनों तक चलने वाली देवी दुर्गा के नौ स्वरूपों की आराधना के साथ ही इस पावन पर्व पर कई घरों में घटस्थापना होती है, तो कई जगह अखंड ज्योत का विधान है। शक्ति की आराधना करने वाले जातक अखंड ज्योति जलाकर माँ दुर्गा की साधना करते हैं। अखंड ज्योति अर्थात ऐसी ज्योति जो खंडित न हो। अखंड ज्योत पूरे नौ दिनों तक अखंड रहनी चाहिए यानी जलती रहनी चाहिए। अंखड दीप को विधिवत मत्रोच्चार से प्रज्जवलित करना चाहिए। नवरात्री में कई नियमो का पालन किया जाता है।

अखंड ज्योत का महत्व

नवरात्री में अखंड ज्योत का बहुत महत्व होता है। इसका बुझना अशुभ माना जाता है। जहा भी ये अखंड ज्योत जलाई जाती है वहां पर किसी न किसी की उपस्थिति जरुरी होती इसे सूना छोड़ कर नहीं जाते है। अखंड ज्योत में दीपक की लौ बांये से दांये की तरफ जलनी चाहिए। इस प्रकार का जलता हुआ दीपक आर्थिक प्राप्ति का सूचक होता है। दीपक का ताप दीपक से 4 अंगुल चारों ओर अनुभव होना चाहिए, इससे दीपक भाग्योदय का सूचक होता है। जिस दीपक की लौ सोने के समान रंग वाली हो वह दीपक आपके जीवन में धन-धान्य की वर्षा कराता है एवं व्यवसाय में तरक्की का सन्देश देता है।

निरंन्तर १ वर्ष तक अंखड ज्योति जलने से हर प्रकार की खुशियों की बौछार होती है। ऐसा दीपक वास्तु दोष, क्लेश, तनाव, गरीबी आदि सभी प्रकार की समस्याओं को दूर करता है। अगर आपकी अखंड ज्योति बिना किसी कारण के स्वयं बुझ जाए तो इसे अशुभ माना जाता। दीपक में बार-बार बत्ती नहीं बदलनी चाहिए। दीपक से दीपक जलाना भी अशुभ माना जाता है। ऐसा करने से रोग में वृद्धि होती है, मांगलिक कार्यो में बाधायें आती हैं। संकल्प लेकर किए अनुष्ठान या साधना में अखंड ज्योति जलाने का प्रावधान है। अखंड ज्योति में घी डालने या फिर उसमें कुछ भी बदलाव का काम साधक को ही करना चाहिए, अन्य किसी व्यक्ति से नहीं करवाना चाहिए।

अंखड ज्योत स्वास्थ्य के लिए भी अच्छी मानी गई हैं।

दरअसल ऐसा माना जाता है कि मां के सामने अंखड ज्योति जलाने से उस घर में हमेशा से मां की कृपा रहती हैं। नवरात्र में अंखड दीप जलाना स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है क्योंकि घी और कपूर की महक से इंसान की श्वास और नर्वस सिस्टम बढ़िया रहता है। नवरात्र में अखंड दीप जलाने से मां कभी अपने भक्तों से नाराज नहीं होती हैं। नवरात्र में अखंड ज्योति से पूजा स्थल पर कभी भी अनाप-शनाप चीजों का साया नहीं पड़ता है। नवरात्र में घी या तेल का अखंड दीप जलाने से दिमाग में कभी भी नकारात्मक सोच हावी नहीं होती है और चित्त खुश और शांत रहता है। घर में सुगंधित दीपक की महक चित्त शांत रखता है जिसके चलते घर में झगड़े नहीं होते, वातावरण शांत रहता है।

आपके दिन की शुरुआत, पारुल भटनागर के साथ
Vediccodes
VASTU • NUMEROLOGY • ASTROLOGY
विशेषज्ञ एस्ट्रो न्यूमेरो वास्तु कंसल्टेंट
परिवहन विशेष News

धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मज़बूत बनाइए रिश्ते

16 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 9 — समापन, करुणा, साहस, मुक्ति और उच्च उद्देश्य

मूलांक 1
धन व करियर: दिन का अंक 9 आपकी नेतृत्व ऊर्जा में उद्देश्य और पूर्णता जोड़ता है। नया अध्याय शुरू करने से पहले कोई महत्वपूर्ण काम पूरा करें, लंबित भुगतान लें या बेकार हो चुकी प्रतिबद्धता समाप्त करें।
रिश्ते: आपकी सीधी प्रकृति आज गहरी भावनाओं से टकरा सकती है। करुणा के साथ नेतृत्व करें और पुराने मतभेद में अंतिम बात कहने की जिद से बचें।
सावधानी: अहंकार की टकराहट, गुस्से में खर्च और अधूरे काम छोड़े बिना नई शुरुआत से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी पूरी करें और अपनी बात साबित करने से अधिक परिपक्वता चुनें।

मूलांक 2
धन व करियर: दिन 9 संवेदनशीलता और करुणा बढ़ाता है। सहयोगी काम आगे बढ़ सकता है, लेकिन आर्थिक सीमाएं स्पष्ट रखें ताकि सहानुभूति व्यावहारिक निर्णय को प्रभावित न करे।
रिश्ते: आज भावनाएं गहरी रह सकती हैं। क्षमा से दूरी कम हो सकती है, लेकिन शांति बनाए रखने के लिए अपनी जरूरतों को दबाएं नहीं।
सावधानी: अपराधबोध में उधार देना, भावनात्मक खर्च और सबकी समस्याएं अपने ऊपर लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: दयालु रहें, लेकिन अपनी सीमाएं न छोड़ें।

मूलांक 3
धन व करियर: आपकी अभिव्यक्ति आज किसी अर्थपूर्ण संदेश को आगे ले जा सकती है। रचनात्मक काम, प्रस्तुति या उपयोगी संवाद पूरा करने के लिए अच्छा दिन है।
रिश्ते: सच्चे शब्द पुरानी गलतफहमी को ठीक कर सकते हैं। दिल से बात करें, लेकिन अतीत को नाटकीय न बनाएं और भावनाओं में बड़ा वादा न करें।
सावधानी: बिखरा खर्च, बढ़ी हुई प्रतिक्रिया और क्षमता से अधिक वादा करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी वाणी का उपयोग उत्साह बढ़ाने, अधूरा पूरा करने और कुछ उपयोगी बनाने में करें।

मूलांक 4
धन व करियर: दिन 9 समापन की ऊर्जा देता है, जबकि आपका मूलांक व्यवस्था पसंद करता है। पुराने खाते, लंबित कागजी काम या बेकार हो चुके सिस्टम को व्यवस्थित तरीके से पूरा करें।
रिश्ते: कोई पुरानी नाराजगी अधूरी लगने के कारण पकड़ी रह सकती है। तय करें कि वास्तव में क्या सुधारना है और क्या अब छोड़ देना बेहतर है।
सावधानी: कठोरता, आलोचना और पुराने आर्थिक या भावनात्मक बोझ को ढोने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक लंबित व्यावहारिक काम पूरा करें और एक अनावश्यक नाराजगी छोड़ें।

मूलांक 5
धन व करियर: दिन 9 किसी बदलाव या अध्याय के समापन में गति ला सकता है। संपर्क, यात्रा या बातचीत एक चरण पूरा करने में मदद कर सकती है, लेकिन पुराने से भागने के लिए तुरंत नए अवसर के पीछे न जाएं।
रिश्ते: स्वतंत्रता की इच्छा बढ़ सकती है। बदलाव जरूरी हो तो स्पष्ट कहें, लेकिन अचानक गायब होने या संवाद बंद करने से बचें।
सावधानी: अचानक खरीदारी, जल्दबाजी में संबंध तोड़ना और भावनात्मक निर्णय को स्वतंत्रता का नाम देने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अगले अनुभव की ओर भागने से पहले जरूरी काम पूरा करें।

मूलांक 6
धन व करियर: दिन 9 आपकी देखभाल की प्रवृत्ति बढ़ाता है और परिवार या सेवा से जुड़े खर्च सामने ला सकता है। जहां उचित हो मदद करें, लेकिन पहले अपनी बचत और जिम्मेदारियां सुरक्षित रखें।
रिश्ते: करुणा और प्रेम मजबूत रहेंगे। सच्चा अपनापन रिश्ते को ठीक कर सकता है, लेकिन प्यार का अर्थ किसी की पूरी जिम्मेदारी उठाना नहीं है।
सावधानी: जरूरत से ज्यादा देना, हर किसी को बचाने की कोशिश और प्रशंसा पाने के लिए खर्च से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: समझदारी से दें, सचेत होकर क्षमा करें और स्वस्थ सीमाएं रखें।

मूलांक 7
धन व करियर: दिन 9 गहरे चिंतन और समापन को समर्थन देता है। देखें कि क्या काम आया, धन या ऊर्जा की छिपी बर्बादी पहचानें और अगले चरण के लिए साफ रणनीति तैयार करें।
रिश्ते: शांत समय में पुरानी भावनाएं सामने आ सकती हैं। उन्हें समझने के लिए उपयोग करें, और अधिक चुप्पी में जाने के लिए नहीं।
सावधानी: अलगाव, निराशावाद और पहले ही पूरे हो चुके अध्याय का बार-बार विश्लेषण करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सीख लें, अध्याय पूरा करें और आगे के लिए मानसिक जगह बनाएं।

मूलांक 8
धन व करियर: दिन 9 आपकी मजबूत आर्थिक ऊर्जा को लंबित विषय निपटाने और संसाधन समझदारी से व्यवस्थित करने को कहता है। बकाया साफ करने, बातचीत पूरी करने या बेकार व्यवस्था समाप्त करने के लिए अच्छा दिन है।
रिश्ते: आज अधिकार से अधिक सहानुभूति काम करेगी। यदि शक्ति संघर्ष चल रहा है तो जीतने के बजाय समाधान पर ध्यान दें।
सावधानी: बदले की भावना में खर्च, कठोर निर्णय और धन या पद से दूसरों को नियंत्रित करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपनी शक्ति से मामलों को न्यायपूर्ण ढंग से पूरा करें और अनावश्यक कड़वाहट न छोड़ें।

मूलांक 9
धन व करियर: आपके मूलांक 9 और दिन के अंक 9 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। समापन, साहस, उदारता और सेवा की भावना बढ़ेगी। बड़े काम पूरे करने के लिए अच्छा दिन है, लेकिन आर्थिक निर्णय भावना से अलग रखें।
रिश्ते: क्षमा, समापन और भावनात्मक ईमानदारी प्रमुख रहेंगे। जो अध्याय पूरा हो चुका है उसे अनावश्यक नाटक के बिना छोड़ें।
सावधानी: गुस्सा, आवेग में उदारता, पुराने विवाद और हर किसी की जिम्मेदारी लेने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक महत्वपूर्ण चक्र गरिमा से पूरा करें और ऊर्जा को उद्देश्यपूर्ण भविष्य की ओर लगाएं।

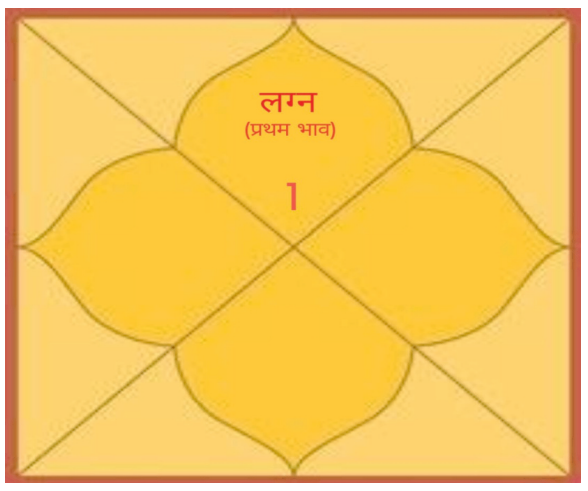
कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes
Vediccodes - Your vibrations... our solutions

जन्म कुंडली में लग्न से जाने जातक का रंग रूप और स्वभाव :



ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक (इंजी)

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक



जन्म कुंडली का प्रथम भाव यानि लग्न से हम जातक के रंग,रूप,स्वभाव, कैरियर,मान सम्मान आदि के विषय में पूर्ण रूप से जान सकते है। कुंडली के प्रथम भाव का कारक ग्रह सूर्य और बृहस्पति है। सूर्य जहां शरीर और आत्मा पर प्रभाव रखता है वहीं गुरु ज्ञान पर। काल पुरुष की कुंडली में लग्न में मेष राशि होती है जो कि मंगल की राशि है। इसका मतलब यह हुआ कि काल पुरुष की कुंडली में लग्नेश मंगल हुए ठीक इसी प्रकार प्रत्येक राशि के राशि पति प्रथम भाव में लग्नेश कहलाएंगे। इसी प्रकार लग्नेश अलग अलग ग्रह आइए हम जानते है कि कौन सा ग्रह लग्न में बैठकर कैसा प्रभाव देता है।

सूर्य: यदि लग्न में सूर्य हो तो जातक अधिक प्रभावशाली,आकर्षक, तेजस्वी तथा आत्मविश्वासी होता है। लग्न में उपस्थित सूर्य जातक को उच्च पदाधिकारी तथा प्रशासनिक अधिकारी बनता है। किंतु ऐसे जातक जिद्दी और मूढ़ी स्वभाव के होते है। जातक की आँखें कुछ कमजोर तथा चेहरे पर मुंहासे होते है। ऐसे जातक अपने शत्रु को दबाकर रखते है।

चंद्र: यदि लग्न में चन्द्र हो तो जातक का चेहरा गोल तथा दिखने में आकर्षक होता है। लग्नस्थ चन्द्र जातक को संवेदनशील, कल्पनाशील,भावुक और चंचल प्रवृति का बना देते है। ऐसा जातक कुशल कलाकार या लेखक होता है। इन्हें यात्रा करना तथा रचनात्मक कार्य अधिक पसंद होता है।

मंगल: यदि लग्न में मंगल उपस्थित हो तो जातक साहसी,निडर और हार न मानने वाले स्वभाव का होता है। यहां उपस्थित मंगल जातक को तेजस्वी और जल्दी फैसले लेने वाला बनाता है यहीं कारण है कि कभी कभी जल्दी में गलत फैसले ले लेता है। लग्न में उपस्थित मंगल जातक को पुलिस, सेना तथा तकनीकी क्षेत्र में सफलता प्रदान करता है। यदि मंगल अशुभ ग्रह के प्रभाव में हो तो जातक को सिर में चोट लगती तथा जातक काफी क्रोधी स्वभाव का हो जाता है वन। ।

गुरु: यदि लग्न में गुरु हो तो जातक चरित्रवान, ज्ञानवान, स्पष्टवादी,सत्य बोलने वाला,धार्मिक प्रवृति का तथा भाग्यशाली होता है। लग्न में गुरु होने से जातक की आँखें बड़ी तथा चेहरा गोल होता है। किंतु कम उम्र में ही बड़े लगने लगते है यह काफी अनुभवी तथा सौम्य स्वभाव के होते है।

लग्नस्थ गुरु यदि उच्च का हो तो जातक कुशल अध्यापक, कुशल सलाहकार या फिर कथावाचक बनाते है ऐसे जातक ज्योतिष में भी रुचि रखता है।

बुध: कुंडली में यदि लग्न में बुध हो तो जातक चतुर , उम्र से छोटा दिखने वाला,कुशल वक्ता तथा बुद्धिमान होता है। ऐसे जातक वाणी और व्यापार में सफल होते है। बुध कला का कारक है इसलिए लग्न में स्थित बुध जातक को कला प्रेमी और कलाकार बनाता है। यदि बुध किसी बुरे ग्रह से प्रभावित है तो जातक को नर्सो तथा त्वचा से संबंधित बीमारी देता है तथा एकाग्रता में कमी लाता है।

शुक्र: जन्म कुंडली के लग्न में यदि शुक्र हो तो जातक दिखने में काफी आकर्षक,मनमोहक,गौर वर्ण का होता है। शुक्र के प्रभाव से जातक में चुंबकीय प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। यह लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में माहिर होते हैं। लग्न में शुक्र होने से जातक ऐश्वर्यपूर्ण और लक्जरी जीवन जीता है। यहां बैठा शुक्र जातक को नृत्य,अभिनेता,गायन और कला के क्षेत्र में सफल बनाता है।

शनि: जन्म कुंडली में यदि शनि लग्न में हो तो जातक अनुशासित,गंभीर और मेहनती होता है। ऐसा जातक दिखने में कुछ सांवला लेकिन ऊंचे कद का दुबला शरीर किंतु अंदर से मजबूत होता है। लग्नस्थ शनि हर काम देरी से बनाते है जातक को पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है,किंतु बाद में जीवने मे स्थिरता भी देते है। लग्न में स्थित शनि जातक को संघर्ष के बाद सफलता प्रदान करते है।

राहु: यदि लग्न में राहु हो तो जातक के चेहरे पर कोई निशान अवश्य होगा और जातक के दांतों में भी कोई विकार होगा। लग्नस्थ राहु जातक को अत्यधिक महत्वाकांक्षी और जिज्ञासु बनता है। जातक संघर्ष करने में माहिर होता है और अचानक से शून्य से शिखर पर पहुंचता है। यहां बैठा राहु जातक को बातूनी ,कुशलवक्ता और साहसी बनता है लेकिन ऐसे जातक हठी और छली प्रवृति के भी हो सकते है। लग्नस्थ राहु जातक को भ्रम पैदा करता है यहीं कारण है कि कभी कभी ये समय पर फैसला नहीं ले पाते और स्वयं का नुकसान कर बैठते है। ऐसे जातकों का वैवाहिक जीवन भी समस्या से भरा होता है।

केतु: यदि लग्न में केतु हो तो जातक रहस्यमयी और अंतर्मुखी स्वभाव का होता है ऐसा जातक चंचल, आध्यात्मिक,वैरागी प्रवृति का होता है। ऐसे जातक स्वयं के आत्म विश्लेषण में लगे रहते है यह दुनिया से दूर खुद की एक काल्पनिक दुनिया में रहना पसंद करते है।

मन अस्थिर होने से कैरियर भी अस्थिर होता है तथा वैवाहिक जीवन में रोमांस की जगह वैराग्य अधिक देखने को मिलता है। इन्हें मानसिक और त्वचा संबंधित रोग होने की संभावना अधिक होती है।

कोलकाता के टॉप 6 दुर्गा पूजा पंडाल 2026 - भक्ति, कला और वास्तुकला का महाकुंभ

एक ही शहर में जयपुर का हवामहल, दिल्ली का लाल किला, उत्तराखंड के पंचकेदार और म्यांमार का पैगोडा — दुर्गा पूजा ने बना दिया विश्व-भ्रमण का मंच

— प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला, परिवहन विशेष

भूमिका: जब पूरा शहर पंडाल बन जाता है इस साल कोलकाता में दुर्गा पूजा को लेकर तैयारियां जोरों पर हैं। पूरे शहर में एक से बढ़कर एक शानदार और अनोखे दुर्गा पूजा पंडाल तैयार किए जा रहे हैं। कहीं आपको जयपुर का मशहूर हवामहल देखने को मिलेगा, तो कहीं आपको म्यांमार के विशाल पैगोडा की झलक देखने को मिलेगी।

यदि आप भी इस साल कोलकाता की दुर्गा पूजा देखने का प्लान बना रहे हैं, तो यह सूची आपके लिए है — कोलकाता के टॉप 6 दुर्गा पूजा पंडाल 2026।

मुख्य बिन्दु: टॉप 6 पंडाल — विस्तृत विवरण

6. College Square दुर्गा पूजा पंडाल — जयपुर का Albert Museum

स्थान: College Street इलाका, कोलकाता

थीम 2026: जयपुर का Albert Museum

खासियत: शहर के सबसे प्रसिद्ध पूजा स्थलों में से एक, बेहद शानदार तरीके से तैयार किया गया।

कैसे पहुंचें: मेट्रो से Central Metro Station तक — यहां से लगभग 600 मीटर की दूरी।

टिप: शाम के बाद पहुंचना ज्यादा अच्छा रहेगा, क्योंकि अंधेरा होने के बाद lighting का पूरा effect देखने को मिलता है।

5. श्रीभूमि स्पोर्टिंग क्लब — जयपुर का हवामहल

स्थान: Canal, Lake Town इलाका

थीम 2026: जयपुर का मशहूर हवामहल

खासियत: राजस्थान की शानदार वास्तुकला की झलक — हवामहल अपनी सैकड़ों खिड़कियों के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है। इसी architecture से प्रेरित होकर पंडाल तैयार किया गया है।

कैसे पहुंचें: City Center या Central Park Metro Station का इस्तेमाल करें।

टिप: रात के समय पंडाल की पूरी lighting on होने पर हवामहल से प्रेरित विशाल संरचना रोशनी में और भी ज्यादा आकर्षक नजर आती है।

4. कल्याणी A9 Square — पंचकेदार

स्थान: कल्याणी, Kalyani Railway Station से सिर्फ कुछ ही दूरी पर

थीम 2026: पंचकेदार — उत्तराखंड के पांच पवित्र केदार मंदिरों से प्रेरित भव्य प्रस्तुति

खासियत: पहाड़ी मंदिरों की वास्तुकला, धार्मिक वातावरण और हिमालयी संस्कृति की झलक। इस साल अपनी बेहद खास धार्मिक theme की वजह से चर्चा में है।

कैसे पहुंचें: Train से आने वालों के लिए बेहद आसान।

3. अर्जुनपुर अमरा सोबाई क्लब — समकालीन कला का संगम

स्थान: अर्जुनपुर, कोलकाता

थीम 2026: शानदार कलाकारी और भव्य पंडाल

खासियत: कोलकाता के चर्चित पंडालों में शामिल, इस साल सजावट को बेहद खास अंदाज में तैयार किया गया है।

टिप: दिन के समय इसकी सूक्ष्म सजावट देखने लायक है, वहीं रात में रंग-बिरंगी lighting के बाद पूरा नजारा और भी आकर्षक हो जाता है।

2. संतोष मित्र स्क्वायर क्लब — दिल्ली का लाल किला

स्थान: Central Kolkata

थीम 2026: दिल्ली का ऐतिहासिक लाल किला

खासियत: बड़े और आकर्षक theme-based पंडाल, शानदार decoration और भव्य माँ दुर्गा की प्रतिमा के लिए जाना जाता है। पूरा पंडाल देशभक्ति की भावना से जुड़ा हुआ है। पंडाल के सामने एक ट्रेन भी लगाई गई है जो theme को और भी खास बना रही है।

टिप: रात में जब पंडाल की शानदार lighting जगमगाएगी तो पूरा लाल किला और आसपास का भव्य set रोशनी में बेहद आकर्षक नजर आएगा।

1. कल्याणी ITI More Luminous Club — म्यांमार का पैगोडा

स्थान: कल्याणी, ITI मोड़

थीम 2026: म्यांमार का Swe Taw Myat Pagoda / Shwedagon Pagoda — यांगून स्थित प्रसिद्ध पैगोडा से प्रेरित विशाल संरचना

खासियत: International theme की वजह से बेहद खास। दूर से देखने पर ऐसा महसूस होगा जैसे आप कोलकाता या कल्याणी में नहीं बल्कि म्यांमार के किसी शानदार बौद्ध मंदिर के सामने खड़े हैं।

कैसे पहुंचें: कल्याणी स्टेशन से ITI मोड़ तक Auto या Toto के जरिए आसानी से पहुंच सकते हैं।

मुख्य तथ्य: क्यों है कोलकाता की दुर्गा पूजा खास?

- UNESCO Intangible Cultural Heritage: कोलकाता की दुर्गा पूजा को UNESCO ने 2021 में अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में शामिल किया है।

- Theme Culture: हर पंडाल एक कहानी कहता है — इतिहास, भूगोल, धर्म और सामाजिक संदेश।

- कलाकारों की मेहनत: महीनों की मेहनत से बांस, कपड़े, मिट्टी और लाइटिंग से बनती है यह कला।

- पर्यटन और अर्थव्यवस्था: दुर्गा पूजा के दौरान लाखों पर्यटक कोलकाता आते हैं, जिससे स्थानीय व्यापार, होटल, ट्रांसपोर्ट को बड़ा लाभ मिलता है।

निष्कर्ष: भक्ति और कला का महाकुंभ कोलकाता की दुर्गा पूजा सिर्फ पूजा नहीं, एक उत्सव है — जहां भक्ति, कला, वास्तुकला, संगीत और सामाजिकता एक साथ मिलते हैं। टॉप 6 पंडालों की यह सूची सिर्फ शुरुआत है, हर गली में एक नई कहानी आपका इंतजार कर रही है।

जय माँ दुर्गा!



झज्जर जिला में एसआईआर का काम पारदर्शी ढंग से जारी : डीसी

डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने अधिकारियों की बैठक में की एसआईआर कार्यों की समीक्षा

कोई भी पात्र मतदाता न छूटे, इस लक्ष्य को लेकर चल रहा प्रशासन



झज्जर, 15 अक्टूबर।*

विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य को लेकर गुरुवार को मुख्य निर्वाचन अधिकारी ए श्रीनिवास ने सभी जिलों के उपायुक्तों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की। बैठक में झज्जर जिला में अब तक हुए कार्य की भी समीक्षा की गई। वीसी के दौरान डीसी एवं जिला निर्वाचन अधिकारी वर्षा खांगवाल ने सीईओ हरियाणा को जिला में एसआईआर गतिविधियों की विस्तृत जानकारी साँझा की।

डीसी वर्षा खांगवाल ने वीसी उपरांत अधिकारियों की बैठक में एसआईआर अभियान की समीक्षा करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि जिला में एसआईआर 2026 का काम बेहद पारदर्शी तरीके से चल रहा है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन का लक्ष्य साफ है कि कोई भी पात्र मतदाता मतदाता सूची से न छूटे।

जिला में अब तक करीब 1लाख 53 हजार 34 नोटिस जारी किए गए, जो सभी संबंधित लोगों तक पहुंचा दिए गए हैं,जिनमें से 1लाख 49 हजार 286 की सुनवाई पूरी हो चुकी है,बाकी की सुनवाई प्रक्रिया जारी है।

उन्होंने बताया कि एसआईआर प्रक्रिया के दौरान फॉर्म 6, 7 और 8 के तहत जिला में 30 हजार 713 आवेदन मिले, इनमें से करीब 18 हजार653 आवेदनों का निस्तारण किया जा चुका है। दावे और आपत्तियों की सूची चारों निर्वाचक पंजीयन अधिकारियों द्वारा हर सप्ताह राजनीतिक दलों के साथ साझा की जा रही है, जबकि दावों और आपत्तियों की सुपर-चेकिंग का काम पूरा हो चुका है।

राजनीतिक दलों की भागीदारी भी इस प्रक्रिया में उल्लेखनीय रही। चारों निर्वाचन पंजीकरण अधिकारियों और जिला निर्वाचन अधिकारी स्तर पर नियमित बैठकें कर इन राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है।

मतदाता सूची की बात करें तो 31

जुलाई 2026 तक जारी प्रारूप सूची में जिला में कुल 6 लाख 68 हजार 832 मतदाता दर्ज हैं। जिला के सभी 807 मतदान केंद्रों पर बूथ लेवल अधिकारी तैनात हैं और उनकी निगरानी के लिए -

सुपरवाइजर भी लगाए गए हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन भारत निर्वाचन आयोग और मुख्य निर्वाचन अधिकारी, हरियाणा के निर्देशों के अनुसार 6 नवंबर 2026 किया जाएगा। उन्होंने सभी अधिकारियों को निर्देश दिए कि शेष कार्य समय पर पूरा किया जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए।

इस अवसर पर एसडीएम झज्जर रवि मीणा, एसडीएम बहादुरगढ़ अभिनव सिवाच, एसडीएम बादली विशाल, एसडीएम बेरी रेणुका नांदल, सीटीएम ऋतु, उपतहसीलदार निर्वाचन कुलदीप सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

सेवा संकल्प अभियान के तहत ग्रामीणों को मिल रही बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

-मातनहेल नागरिक अस्पताल में आयोजित मेगा हेल्थ कैंप में विशेषज्ञ चिकित्सकों ने दी स्वास्थ्य सेवाएं

परिवहन विशेष न्यूज





झज्जर, 15 अक्टूबर

सेवा संकल्प अभियान-2026 के तहत वीरवार को नागरिक अस्पताल, मातनहेल में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में मेगा हेल्थ कैंप का आयोजन किया गया। शिविर में जिला परिषद झज्जर के चेयरमैन कप्तान बिरधाना ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। शिविर में लगभग 150 मरीजों ने पहुंचकर विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श लिया और निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया।

विशेषज्ञ चिकित्सकों ने की मरीजों की जांच

मेगा हेल्थ कैंप के दौरान मरीजों को विशेषज्ञ चिकित्सकों का परामर्श, ईसीजी और टेली-ईसीजी जांच की सुविधा उपलब्ध कराई गई। इसके अलावा मरीजों को आवश्यकतानुसार एलोपैथिक एवं आयुर्वेदिक दवाइयां भी निशुल्क प्रदान की गईं। जिला नागरिक अस्पताल, झज्जर और वर्ल्ड मेडिकल कॉलेज, झज्जर से पहुंचे विशेषज्ञ चिकित्सकों ने मरीजों की स्वास्थ्य जांच कर उन्हें आवश्यक परामर्श दिया।

ग्रामीणों को घर के नजदीक मिल रहीं बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

मुख्य अतिथि कप्तान बिरधाना ने स्वास्थ्य विभाग की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में इस प्रकार के मेगा हेल्थ कैंप आयोजित होने से लोगों को घर के नजदीक ही बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होती हैं। ऐसे शिविर आमजन को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने और समय पर जांच व उपचार की सुविधा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिविर में पहुंचे ग्रामीणों ने भी विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श और निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं मिलने पर संतोष व्यक्त किया तथा स्वास्थ्य विभाग की टीम का आभार जताया।

स्वास्थ्य विभाग की टीम ने निभाई अहम भूमिका

शिविर के सफल आयोजन में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर डिप्टी सिविल सर्जन डॉ. कुलदीप सिंह, डिप्टी सिविल सर्जन डॉ. निधि मोमिया, डॉ. दिनेश कुमार, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी एवं प्रभारी, तथा डॉ. विजय पूनिया, चिकित्सा अधिकारी, नागरिक अस्पताल मातनहेल सहित अस्पताल का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

सेवा मेरा योगदान थीम के तहत आईटीआई गुढ़ा में बनाई सेवा संकल्प मानव श्रृंखला



मानव श्रृंखला के माध्यम से विद्यार्थियों को अनुशासन, स्वच्छता, एकता और टीम वर्क का दिया संदेश

सेवा संकल्प अभियान के तहत विद्यार्थियों को सामाजिक जिम्मेदारी निभाने और आपसी सहयोग से आगे बढ़ने के लिए किया प्रेरित

झज्जर, 15 अक्टूबर

जिला झज्जर में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में 17 अक्टूबर तक चल रहे सेवा संकल्प अभियान-2026 के तहत सेवा मेरा योगदान थीम के अंतर्गत राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई), झज्जर एट गुढ़ा में गुरुवार को विद्यार्थियों ने मानव श्रृंखला बनाकर सेवा, एकता और सहयोग का संदेश दिया।

कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग, हरियाणा के तत्वावधान में संस्थान के प्रधानाचार्य जीतपाल के मार्गदर्शन में आयोजित इस गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों को अनुशासन, टीम वर्क, स्वच्छता, एकता और आपसी सहयोग के प्रति जागरूक करना था। मानव श्रृंखला में विभिन्न व्यवसायों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया और सामूहिक प्रयासों से आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

प्रधानाचार्य ने बताया कि सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत विद्यार्थियों को सामाजिक सरोकारों और जन कल्याणकारी गतिविधियों से जोड़ने के लिए संस्थान में निरंतर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनमें आशीर्वाद का दीया, वोकल फॉर लोकल, रक्तदान शिविर, मेडिकल चेकअप, स्वच्छता अभियान और पौधारोपण जैसी गतिविधियां शामिल हैं। उन्होंने कहा कि इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी, सेवा भावना और सकारात्मक सोच विकसित करना है। मानव श्रृंखला के माध्यम से भी विद्यार्थियों को यह संदेश दिया गया कि अनुशासन, एकता और आपसी सहयोग से सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

सेवा मेरा योगदान थीम के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रेरित किया जा रहा है कि वे अपने दैनिक जीवन में सेवा, स्वच्छता और सहयोग की भावना अपनाएं तथा समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।

सेवा संकल्प अभियान के तहत क्रिकेट स्टेडियम में आज सजेगी मानव श्रृंखला



प्राकृतिक रंगों से दिखेगी विकसित भारत की झलक

क्रिकेट स्टेडियम में मानव श्रृंखला से साकार होगा विकसित भारत @ 2047 का संकल्प

झज्जर, 15 अक्टूबर

सेवा, सहयोग और जनभागीदारी के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से जिला में 17 अक्टूबर तक चलने वाले सेवा संकल्प अभियान के तहत विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इसी कड़ी में शुक्रवार, 16 अक्टूबर को झज्जर में दिल्ली रोड स्थित क्रिकेट स्टेडियम परिसर में मानव श्रृंखला और प्राकृतिक रंगोली का भव्य आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम में विद्यार्थियों की सहभागिता से मानव श्रृंखला के माध्यम से विकसित भारत @ 2047 के संकल्प को साकार रूप में प्रदर्शित किया जाएगा। वहीं प्राकृतिक सामग्रियों से तैयार रंगोली पर्यावरण संरक्षण और भारतीय संस्कृति का संदेश देगी।

डीईओ रतींद्र सिंह ने गुरुवार को जानकारी देते हुए बताया कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देशानुसार प्रदेशभर में सेवा संकल्प अभियान चलाया जा रहा है। डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर जिला में अभियान के तहत जनभागीदारी बढ़ाने और युवाओं को राष्ट्र निर्माण के प्रति जागरूक करने के लिए रचनात्मक गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने बताया कि जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में होने वाला यह कार्यक्रम रंगों, रचनात्मकता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्रभक्ति का अनूठा संगम बनेगा। इसमें विद्यार्थी अनुशासित ढंग से पंक्तिबद्ध होकर सेवा संकल्प अभियान की मानव श्रृंखला तैयार करेंगे। इसके माध्यम से विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका, सामूहिक प्रयासों की महत्ता और देश के उज्ज्वल भविष्य का संदेश दिया जाएगा।

प्राकृतिक रंगोली के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण प्राकृतिक रंगोली होगी, जिसे प्राकृतिक सामग्रियों से तैयार किया जाएगा। इसके माध्यम से पर्यावरण के अनुकूल संसाधनों के उपयोग, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और पारंपरिक भारतीय कला को बढ़ावा देने का संदेश दिया जाएगा। प्राकृतिक सामग्रियों से उकेरी जाने वाली रंगोली में विकसित भारत @ 2047 की परिकल्पना की झलक देखने को मिलेगी।

शिक्षा विभाग ने तेज की तैयारियां

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए शिक्षा विभाग की ओर से तैयारियां जोर-शोर से की जा रही हैं। जिला शिक्षा अधिकारी रतिंद्र सिंह और जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी राजबाला मलिक के नेतृत्व में आयोजन की व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया जा रहा है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों के साथ आमजन की भागीदारी भी सुनिश्चित की जाएगी, ताकि सेवा संकल्प अभियान का संदेश व्यापक स्तर पर पहुंचे।

डीईओ ने कहा कि ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अनुशासन, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और राष्ट्र के विकास में योगदान देने की भावना को मजबूत करते हैं। सेवा संकल्प अभियान के माध्यम से जनभागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए विकसित और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य की दिशा में सामूहिक प्रयासों को नई ऊर्जा दी जा रही है।

राशन डिपो के लाइसेंस के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित : 10 नवंबर तक सरल पोर्टल पर करें आवेदन, महिलाओं को मिलेगा 33 प्रतिशत आरक्षण : डीसी वर्षा खांगवाल

डीएफएससी आदित्य कौशिक ने पात्र आवेदकों से दिशा-निर्देशों व पात्रता शर्तों का अध्ययन कर आवेदन करने की अपील की

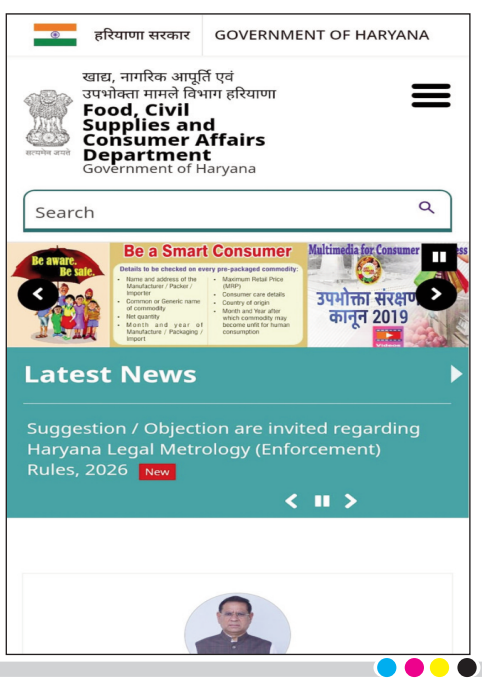
झज्जर, 15 अक्टूबर

हरियाणा सरकार द्वारा प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को और अधिक सुदृढ़ बनाने, पात्र परिवारों को राशन की सुलभ उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है। इसके तहत प्रदेश में 2,651 रिक्त उचित मूल्य की दुकानों (राशन डिपो) के लाइसेंस जारी करने के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इस प्रक्रिया में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान किया गया है। इच्छुक एवं पात्र आवेदक 10 नवंबर, 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य उन पात्र परिवारों की समस्याओं का समाधान करना है, जिन्हें राशन प्राप्त करने के लिए दूर स्थित राशन डिपुओं तक जाना पड़ता है। नए राशन डिपो आवंटित होने से जरूरतमंद परिवारों को सुविधा मिलेगी। साथ ही, पात्र युवाओं और महिलाओं को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली की सेवाएं जमीनी स्तर पर और अधिक प्रभावी बनेंगी।

डीएफएससी आदित्य कौशिक ने बताया कि उचित मूल्य की दुकानों के लाइसेंस के लिए आवेदन हरियाणा अंत्योदय सरल पोर्टल https://saralharyana.gov.in के माध्यम से किया जा सकता है। आवेदन करने से पहले इच्छुक आवेदकों को निर्धारित दिशा-निर्देशों, आवेदन प्रक्रिया और पात्रता शर्तों का भलीभांति अध्ययन करना चाहिए, ताकि आवेदन करते समय किसी प्रकार की परेशानी न हो। उन्होंने बताया कि रिक्त राशन डिपुओं का जिलावार एवं ग्रामवार विवरण, आवेदन संबंधी विस्तृत दिशा-निर्देश और पात्रता शर्तें खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मामले विभाग, हरियाणा की आधिकारिक वेबसाइट https://haryanafood.gov.in पर उपलब्ध हैं। आवेदक इन वेबसाइट के माध्यम से अपने क्षेत्र में उपलब्ध रिक्तियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

डीएफएससी ने सभी इच्छुक एवं पात्र आवेदकों, विशेषकर युवाओं और महिलाओं, से अपील की कि वे इस अवसर का लाभ उठाते हुए निर्धारित अंतिम तिथि 10 नवंबर, 2026 तक ऑनलाइन आवेदन करें और प्रदेश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को मजबूत बनाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।



झज्जर जिला में खरीफ खरीद प्रक्रिया को लेकर प्रशासन सक्रिय : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने ली नोडल अधिकारियों की बैठक

बाजरा-धान खरीद के लिए झज्जर की आठ मंडियों में अधिकारियों की ड्यूटी की निर्धारित

परिवहन, मजदूरों की उपलब्धता और फसल उठान से लेकर किसानों की सुविधाओं तक की की जा रही नियमित निगरानी

झज्जर, 15 अक्टूबर

खरीफ फसल खरीद सीजन 2026-27 के दौरान बाजरा और धान की खरीद व्यवस्था सुचारू बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन पूरी तरह से सक्रिय है। डीसी वर्षा खांगवाल ने गुरुवार को जिला की अनाज मंडियों व खरीद केंद्रों के नोडल अधिकारियों की संयुक्त बैठक लेते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। डीसी ने कहा कि मंडियों में किसानों द्वारा फसल लेकर आने से लेकर उनकी फसल की खरीद उपरांत उन्हें निर्धारित पेमेंट देने व खरीदी गई फसल का नियमित उठान करवाने में सभी नोडल अधिकारी अपनी जिम्मेदारी निभाएं। इससे पहले हरियाणा के मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी के साथ हुई वीडियो कॉन्फ्रेंस में डीसी ने विस्तार से जिला में खरीफ फसल प्रक्रिया के बारे में अवगत कराया।

डीसी वर्षा खांगवाल ने बताया कि झज्जर जिला की आठ अनाज मंडियों एवं खरीद केंद्रों में अधिकारियों की ड्यूटी निर्धारित की हुई है। नियुक्त नोडल अधिकारी खरीद प्रक्रिया की निगरानी करेंगे, जबकि ड्यूटी मजिस्ट्रेट-कम-शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष और सदस्य किसानों व आढ़तियों की समस्याओं के समाधान, परिवहन व्यवस्था, मजदूरों की उपलब्धता और फसल उठान पर नजर रखेंगे।

इन अधिकारियों को सौंपी अनाज मंडी स्तर पर जिम्मेदारी

झज्जर अनाज मंडी के लिए एसडीएम रवि मीणा को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है जबकि नायब तहसीलदार अंशुल शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष होंगे। वहीं समिति में हैफेड के मैनेजर जसवीर, एचडब्ल्यूसी के टीए अजय कुमार, खाद्य आपूर्ति विभाग से अजय राठी, कृषि विभाग से एडीओ मंगेश और मार्केट कमेटी से दीपक चौधरी को सदस्य बनाया गया है।

मातनहेल मंडी के लिए सीईओ जिला परिषद मनीष फोगाट को नोडल अधिकारी लगाया गया है जबकि तहसीलदार कृष्ण शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष होंगे। समिति में हैफेड के मैनेजर जयप्रकाश, एचडब्ल्यूसी से टीए अजय कुमार, खाद्य आपूर्ति विभाग से रंजन यादव, कृषि विभाग से बीएओ संदीप कुमार और मार्केट कमेटी से दीपक चौधरी शामिल हैं।

ढाकला अनाज मंडी के लिए जीएम रोडवेज अनित यादव नोडल अधिकारी होंगे जबकि नायब तहसीलदार मातनहेल नवदीप कुमार शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष होंगे। वहीं टीम में हैफेड के मैनेजर जयप्रकाश, एचडब्ल्यूसी के टीए अजय कुमार, खाद्य आपूर्ति विभाग से परमजीत, कृषि विभाग के बीएओ सुरेंद्र डागर और मार्केट कमेटी के सचिव विकास को शामिल किया गया है। बेरी अनाज मंडी में एसडीएम रेणुका नांदल को नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया है जबकि नायब तहसीलदार मनोज शिकायत निवारण समिति के अध्यक्ष होंगे।

दिल्ली प्रदूषण: CJI बोले — हमारे पास जादू की छड़ी नहीं, समाधान वैज्ञानिकों को खोजना होगा

अदालत, सरकार और वैज्ञानिक — जिम्मेदारी किसकी? और एक युवा आविष्कारक का 15 साल पुराना दावा क्यों

विशेष संवाददाता परिवहन विशेष समाचार पत्र

दिल्ली-NCR के प्रदूषण पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के दौरान मुख्य न्यायाधीश (CJI) सूर्यकांत की टिप्पणी ने फिर बहस छेड़ दी है —

> "We don't have a magic wand which courts can use to find quick solutions. There is no one reason for the problem. Only domain experts and scientists can find out solutions to deal with each reason."

पीठ में न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची भी थे। एमिकस क्यूरिये वरिष्ठ अधिवक्ता अपराजिता सिंह ने इसे ₹health emergency₹ बताते हुए तत्काल सुनवाई की मांग की थी। कोर्ट ने MC मेहता मामले को नियमित सुनवाई पर लेने का फैसला किया और कहा — यह मामला हर साल दिवाली पर ceremonial तरीके से आता है और सर्दी खत्म होते ही गायब हो जाता है, अब continuous monitoring होगी।

यह टिप्पणी न्यायपालिका की सीमा को रेखांकित करती है, हाथ झाड़ना नहीं। कोर्ट आदेश दे सकता है, GRAP लागू करवा सकता है, CAQM को निर्देश दे सकता है — लेकिन हवा को साफ करने की तकनीक कोर्ट नहीं बना सकता। इसके लिए सरकार, वैज्ञानिक संस्थाएं और उद्योग — तीनों को मिलकर काम करना होगा।

क्या कहा CJI ने?

- समस्या एक नहीं, अनेक हैः पराली, वाहनों का धुआं, निर्माण धूल, औद्योगिक उत्सर्जन, मौसम और भौगोलिक स्थिति — सब मिलकर दिल्ली को गैस चैंबर बनाते हैं।

- समाधान भी एक नहीं होगाः हर कारण का अलग, विज्ञान-सम्मत समाधान चाहिए।

- नियमित निगरानीः सिर्फ सर्दियों में सुनवाई से काम नहीं चलेगा।

- सरकार से उम्मीदः ₹We hope and expect that the government may have come up with something.₹

17 दिसंबर को इसी पीठ ने मौजूदा उपायों को ₹total failure₹ तक कहा था। इससे स्पष्ट है कि कोर्ट ने जिम्मेदारी टाली नहीं, बल्कि जिम्मेदारी के बंटवारे पर जोर दिया है।

दूसरा पक्ष — युवा वैज्ञानिक शैलेन्द्र कुमार बिराणी का दावा इस बहस के बीच युवा वैज्ञानिक शैलेन्द्र कुमार बिराणी का दावा फिर चर्चा में है। उनके अनुसार —

- उन्होंने प्रदूषण कम करने वाली तकनीक का आविष्कार किया और पेटेंट प्राप्त किया।

- संयुक्त राष्ट्र संघ, रेड क्रॉस सोसायटी जेनेवा, द ग्लोबल फंड, WHO, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, क्लिंटन फाउंडेशन, अमेरिकी राष्ट्रपति कार्यालय सहित दुनियाभर की कंपनियों से पत्र/ईमेल प्राप्त किए।

- 2011 में यह पूरी फाइल राष्ट्रपति के पास भेजी गई, जो अंतिम फैसले के लिए अधिकृत थीं।

- उनका आरोप है कि तब से आज तक कोई अंतिम फैसला नहीं लिया गया, कोरोना के दौरान भी नहीं, जब प्रदूषण और स्वास्थ्य का संकट चरम पर था।

नोटः इन पत्रों, पेटेंट की व्यावसायिक उपयोगिता और राष्ट्रपति कार्यालय में फाइल की स्थिति के बारे में स्वतंत्र रूप से सार्वजनिक रूप से सत्यापित दस्तावेज अभी सामने नहीं आए हैं। इसलिए इस दावे को एक अनसुलझा प्रशासनिक प्रश्न के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि सिद्ध तथ्य के रूप में। यदि यह तकनीक वास्तव में प्रभावी है, तो इसका वैज्ञानिक मूल्यांकन — IIT, CSIR, CPCB, NEERI, ICMR जैसी संस्थाओं से peer-review और field trial — अनिवार्य है। बिना परीक्षण के किसी भी आविष्कार को राष्ट्रीय नीति नहीं बनाया जा सकता।

यही वह बिंदु है जहां CJI की टिप्पणी और बिराणी का दावा मिलते हैं — अदालत ने कहा है कि समाधान वैज्ञानिकों को खोजना है। इसका अर्थ यह भी है कि वैज्ञानिक दावों को ठंडे बस्ते में नहीं, वैज्ञानिक प्रक्रिया में डालना होगा — जांच, परीक्षण, प्रमाण, फिर नीति।

अमृतकाल में प्रदूषण और एयर प्यूरिफायर की विडंबना प्रधानमंत्री के अमृतकाल में प्रदूषण खत्म करने की बात हो रही है, लेकिन जमीनी हकीकत यह है कि दिल्लीवासी एयर प्यूरिफायर, मास्क और वर्चुअल सुनवाई पर निर्भर हो गए हैं।

सवाल यह नहीं है कि जादू की छड़ी किसके पास है। सवाल यह है —

1. सरकार ने CAQM, GRAP, इलेक्ट्रिक वाहन, पराली प्रबंधन, निर्माण नियमों पर क्या दीर्घकालिक योजना बनाई?

2. न्यायपालिका ने उसकी नियमित निगरानी कितनी कड़ी की?

3. वैज्ञानिक समुदाय ने अपने आविष्कारों को प्रयोगशाला से मैदान तक पहुंचाने के लिए क्या पुल बनाया?

निष्कर्ष CJI का बयान जिम्मेदारी से भागना नहीं, बल्कि जिम्मेदारी को सही जगह सौंपना है — अदालत आदेश देगी, सरकार अमल करेगी, वैज्ञानिक समाधान देंगे।

और बिराणी जैसे युवा वैज्ञानिकों का मामला इस व्यवस्था की परीक्षा है — यदि उनके पास वाकई समाधान है, तो उसे 15 साल तक फाइल में दबाकर रखना भी एक विफलता है। और यदि दावा अप्रमाणित है, तो उसे भी पारदर्शी वैज्ञानिक जांच से स्पष्ट करना ही लोकतंत्र की मर्यादा है।

मनुष्य प्रजाति का भविष्य न तो अदालत के आदेश से अकेले बचेगा, न किसी एक आविष्कार से। वह बचेगा तब, जब संविधान, सरकार और विज्ञान तीनों एक साथ काम करेंगे — यही इस प्रदूषण संकट का सबसे बड़ा संदेश है।



जनसुनवाई में विकास की बदहाल तस्वीर! पुल बना, लेकिन पहुंच मार्ग गायब





सुंदरगढ़ में अधूरी बुनियादी सुविधा पर उठे सवाल, निर्माण के बावजूद ग्रामीणों को नहीं मिल रहा अपेक्षित लाभ

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़

सरकारी विकास योजनाओं की जमीनी हकीकत उस समय सवालों के घेरे में आ जाती है, जब करोड़ों की बुनियादी परियोजनाएं पूरी होने के बावजूद आम लोगों को उनका अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। पुल का ढांचा तैयार दिखाई दे रहा है, लेकिन उससे जुड़ने वाले पहुंच मार्ग की कमी विकास कार्यों की योजना, क्रियान्वयन और निगरानी पर सवाल खड़े करती है।

पुल तैयार, फिर भी आवागमन की समस्या बरकरार तस्वीरों में पुल का निर्माण दिखाई देता है, जबकि आसपास के संपर्क मार्ग की स्थिति अधूरी नजर आती है। ग्रामीण क्षेत्रों में पुल का उद्देश्य केवल नदी या नाले के ऊपर आवागमन की सुविधा देना नहीं, बल्कि गांवों को मुख्य सड़क, बाजार, विद्यालय, अस्पताल और अन्य आवश्यक सेवाओं से जोड़ना भी है। यदि पुल के दोनों छोर तक सुगम सड़क संपर्क उपलब्ध नहीं है, तो परियोजना का व्यावहारिक लाभ सीमित रह जाता है।

इस स्थिति में सवाल उठता है कि निर्माण की योजना बनाते समय पहुंच मार्ग को पर्याप्त प्राथमिकता दी गई थी या नहीं। क्या संपर्क सड़क परियोजना के मूल प्रस्ताव में शामिल थी? यदि हां, तो उसका निर्माण अब तक पूरा क्यों नहीं हुआ? इन प्रश्नों का उत्तर संबंधित विभाग के आधिकारिक रिकॉर्ड और स्थल निरीक्षण से सामने आना चाहिए।

जनसुनवाई के उद्देश्य की असली परीक्षा जनसुनवाई शासन और आम जनता के बीच संवाद का महत्वपूर्ण माध्यम है। ओडिशा में मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने भी नागरिकों की शिकायतों के प्रत्यक्ष समाधान के उद्देश्य से जनसुनवाई व्यवस्था को सक्रिय किया है लेकिन जनसुनवाई की सार्थकता तभी सिद्ध होती है, जब शिकायतों पर ठोस कार्रवाई हो और समस्याओं का समाधान धरातल पर दिखाई दे।

जवाबदेही तय हो, समयसीमा में पूरा हो काम संबंधित विभाग को पुल और पहुंच मार्ग की वर्तमान स्थिति स्पष्ट करते हुए स्वीकृत बजट, कार्यादेश, निर्माण की समयसीमा तथा शेष कार्यों का विवरण सार्वजनिक करना चाहिए। यदि निर्माण में देरी हुई है, तो उसके कारणों की समीक्षा कर जिम्मेदारी निर्धारित की जानी चाहिए।

विकास का मूल्यांकन केवल निर्मित ढांचे से नहीं, बल्कि जनता को मिलने वाली सुविधा से होना चाहिए। पुल के साथ संपर्क मार्ग भी पूरा होना जरूरी है, ताकि सरकारी निवेश का वास्तविक लाभ ग्रामीणों तक पहुंचे और विकास का दावा जमीन पर सार्थक साबित हो।

रुंगटा माइंस की प्रस्तावित परियोजना में गोपनीय सूचना के दुरुपयोग का आरोप, जिला प्रशासन ने जांच के लिए भेजा मामला



राजकुमार यादव की शिकायत पर सुंदरगढ़ के भू-अर्जन अधिकारी की कार्रवाई, कोईडा तहसीलदार से तथ्यात्मक रिपोर्ट तलब

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र सुंदरगढ़

सुंदरगढ़ जिले के कोईडा तहसील क्षेत्र में रुंगटा माइंस प्राइवेट लिमिटेड की प्रस्तावित परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण से जुड़े मामले में गोपनीय सरकारी सूचनाओं के कथित दुरुपयोग का आरोप प्रशासनिक जांच के दायरे में पहुंच गया है। शिकायतकर्ता डॉ. राजकुमार यादव की ओर से प्रस्तुत अभ्यावेदन पर कार्रवाई करते हुए सुंदरगढ़ के भू-अर्जन अधिकारी ने कोईडा तहसीलदार को पत्र भेजकर आरोपों की जांच और तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया है।

भूमि खरीद में गोपनीय सूचना के इस्तेमाल का आरोप जिला भू-अर्जन कार्यालय के पत्र संख्या 1229, दिनांक 7 अक्टूबर 2026 के अनुसार, राजकुमार यादव ने 6 अगस्त 2026 को शिकायत प्रस्तुत की थी। इसमें आरोप लगाया गया कि रुंगटा माइंस की प्रस्तावित परियोजना से संबंधित कुछ गोपनीय जानकारियों का कथित तौर पर दुरुपयोग कर परियोजना क्षेत्र में बाजार मूल्य से कम कीमत पर भूमि खरीदने का प्रयास किया गया हो सकता है।

शिकायत में आशंका जताई गई है कि कुछ सरकारी अधिकारी या कर्मचारी परियोजना से संबंधित गोपनीय सूचनाओं के अनुचित इस्तेमाल में शामिल हो सकते हैं। हालांकि, पत्र में इन आरोपों को स्थापित तथ्य नहीं, बल्कि जांच योग्य शिकायत के रूप में दर्ज किया गया है।

तहसीलदार से जांच और दस्तावेजों सहित रिपोर्ट मांगी भू-अर्जन अधिकारी ने कोईडा तहसीलदार को शिकायत में लगाए गए आरोपों की जांच करने और आवश्यक सत्यापन कराने को कहा है। साथ ही, संबंधित दस्तावेजों सहित विस्तृत तथ्यात्मक रिपोर्ट सुंदरगढ़ जिला प्रशासन को उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है, ताकि कलेक्टर के समक्ष मामले पर विचार किया जा सके।

इस पत्र की प्रति शिकायतकर्ता राजकुमार यादव को भी सूचनार्थ भेजी गई है।

जांच के निष्कर्ष पर टिकी निगाहें प्रशासनिक पत्राचार से स्पष्ट है कि शिकायत को जांच के लिए संबंधित अधिकारी के पास भेजा गया है। हालांकि, अभी तक उपलब्ध दस्तावेज में जांच के अंतिम निष्कर्ष, किसी अधिकारी की संलिप्तता अथवा अनियमितता की पुष्टि का उल्लेख नहीं है।

अब महत्वपूर्ण होगा कि भूमि खरीद के दस्तावेजों, सूचना के संभावित स्रोतों और संबंधित अधिकारियों की भूमिका की निष्पक्ष जांच हो। जांच रिपोर्ट सामने आने के बाद ही आरोपों की वास्तविकता और आगे की कार्रवाई की दिशा स्पष्ट हो सकेगी।

पंजाब में AAP सरकार का जंगलराज! नशा माफियाओं को खुला संरक्षण ?

मानसा में 'चिट्टा' की बिक्री का भंडाफोड़ कर रहे नशा विरोधी कार्यकर्ता परविंदर सिंह झोटा पर लाइव ब्रॉडकास्ट के दौरान सरेआम गोलियां — क्या नशे के खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ को इसी तरह गोलियों से भून दिया जाएगा ?

रिपोर्ट केके छाबड़ा, प्रस्तुतकर्ता प्रधान संपादकः संजय कुमार बाठला, परिवहन विशेष

भूमिकाः दिन-दहाड़े, ऑन-कैमरा, हत्या — पंजाब शर्मसार पंजाब के मानसा में जो हुआ, वह सिर्फ एक हत्या नहीं है। वह पंजाब की कानून-व्यवस्था, नशा-विरोधी अभियान और सरकार की नीयत पर सबसे बड़ा सवाल है।

नशे के खिलाफ आवाज़ उठाने वालों को दिन-दहाड़े, ऑन-कैमरा, गोली मारी जा रही है। नशा बेचने से रोक रहा था — गोलियां मारकर हत्या कर दी गई।

यही है इस वीडियो का शीर्षक, और यही है पंजाब की हकीकत।

मुख्य तथ्यः क्या हुआ मानसा में ?

तथ्य	विवरण
स्थान	मानसा, पंजाब
तारीख	मंगलवार, 13 अक्टूबर 2026
मृतक	परविंदर सिंह झोटा (45) — नशा विरोधी कार्यकर्ता, एंटी ड्रग टास्क फोर्स
घटना	मेडिकल स्टोर पर 'चिट्टा' (हेरोइन) की कथित बिक्री का भंडाफोड़ — फेसबुक लाइव के दौरान
आरोपी	अश्वनी कुमार — मेडिकल स्टोर मालिक, लाइसेंसी पिस्तौल से गोली चलाने का आरोप
गोली	3 गोलियां — 2 पेट में, 1 दाहिनी जांघ में, 1 गोली लिवर में लगी, मौत
घायल	4 साथी — कुलविंदर सिंह, गोबिंद सिंह, बलतेज सिंह, हैप्पी
पृष्ठभूमि	जुलाई 2023 में भी इसी दुकानदार से विवाद — जूतों की माला पहनाकर घुमाने का आरोप
गिरफ्तारी	मुख्य आरोपी बाद में राजस्थान के सालासर से गिरफ्तार
*मांग *	
	CBI जांच,
	सीएम भगवंत मान का इस्तीफा,
	DGP को बर्खास्त,
	PGIMER चंडीगढ़ से पोस्टमार्टम,

पंजाब बंद का आह्वान

मुख्य बिन्दु 1: झोटा कौन थे ? — नशे के खिलाफ अकेली आवाज़ परविंदर सिंह झोटा पूर्व बॉक्सर और कबड्डी खिलाड़ी थे। वे मानसा में लंबे समय से नशे के खिलाफ अभियान चला रहे थे। सोशल मीडिया लाइव के जरिए वे इलाके में नशीले पदार्थों और प्रतिबंधित दवाओं की कथित बिक्री को उजागर करते थे।

उनकी मां ने कहा — "मेरा बेटा बार-बार कहता था, मां ये लोग मुझे मार डालेंगे।" घटना वाले दिन घर से निकलते समय उसने मां के पैर छुए और खाना तैयार रखने को कहा था।

झोटा ने अपनी मौत से पहले कथित नशा कारोबार की CBI जांच की मांग भी की थी।

मुख्य बिन्दु 2: वीडियो में क्या दिखा ? — 5 मिनट 48 सेकंड की लाइव स्ट्रीमिंग झोटा और उनके साथी दुकानदार से सवाल करते, CCTV फुटेज की मांग करते और पूछते हुए दिख रहे हैं कि वह पिस्तौल क्यों रखे हुए था। करीब 4 मिनट तक बहस चलती रही, जिसके बाद दुकानदार ने फोन पर किसी से बात की और कथित तौर पर गोली चला दी।

> "नशा बेचने से रोक रहा था — गोलियां मारकर की हत्या"

यह एक सबूत नहीं, पंजाब की नशा-व्यवस्था का लाइव दस्तावेज है।

मुख्य बिन्दु 3: अरविंद केजरीवाल, भगवंत मान जवाब दें

सवाल 1: क्या नशे के खिलाफ उठने वाली हर आवाज़ को इसी तरह गोलियों से भून दिया जाएगा ?

सवाल 2: क्या आपकी सरकार इसी कानून-व्यवस्था के लिए पंजाब की जनता से वादे कर रही थी ?

सवाल 3: 'युद्ध नशियां विरुद्ध' अभियान का क्या हुआ, जब अभियान चलाने वाले ही असुरक्षित हैं ?

पूर्व कांग्रेस प्रमुख अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग ने कहा — "परविंदर सिंह झोटा की दिनदहाड़े हत्या भगवंत मान सरकार की विफल कानून-व्यवस्था और विफल 'युद्ध नशे के विरुद्ध' का सीधा नतीजा है।"

शिरोमणि अकाली दल के प्रमुख सुखबीर सिंह बादल ने भी कहा कि झोटा नशे के खिलाफ लगातार आवाज़ उठा रहे थे, लेकिन उन्हें पर्याप्त समर्थन नहीं मिला।

मुख्य बिन्दु 4: नशा माफियाओं को खुला संरक्षण — या सत्ता की नाकामी ? आरोप गंभीर है — नशा माफियाओं को खुला संरक्षण मिल रहा है।

कैसे ?

- मेडिकल स्टोर से नशा बिक रहा है, पर कार्रवाई नहीं



- आवाज़ उठाने वालों को धमकियां मिलती हैं, पर सुरक्षा नहीं

- लाइसेंसी हथियार से दिन-दहाड़े गोली चल जाती है, पर डर नहीं

- नशा विरोधी कार्यकर्ता की मां भी जान का खतरा जताती रही, पर सुनवाई नहीं

जब एक व्यक्ति नशे के खिलाफ अकेले लड़ रहा हो और सरकार उसे सुरक्षा नहीं दे सके, तो यह सरकार की विफलता है, न कि व्यक्ति की हार।

मुख्य बिन्दु 5: पंजाब की जनता हिसाब मांगेगी झोटा की हत्या के बाद मानसा में गुस्सा फैल गया। समर्थक सिविल अस्पताल में जमा हुए, बारा हट्टा चौक की ओर विरोध मार्च निकाला, दुकान में तोड़फोड़ की, सीएम के होर्डिंग फाड़े, कई दुकानें बंद रहीं, प्राइवेट स्कूलों ने छात्रों को घर भेज दिया।

संयुक्त कार्य समिति ने मांग की:

1. आरोपी की तुरंत गिरफ्तारी
2. मुख्यमंत्री भगवंत मान का इस्तीफा
3. DGP को बर्खास्त करना
4. CBI जांच
5. PGIMER चंडीगढ़ के पैनल द्वारा पोस्टमार्टम
6. गुरुवार को पंजाब बंद

झोटा के पिता ने न्याय मिलने तक अंतिम संस्कार करने से इनकार कर दिया।

निष्कर्षः नशे के खिलाफ आवाज़ दबाई नहीं जा सकती

पंजाब की जनता इस बेलगाम अपराध और सत्ता की नाकामी का पूरा हिसाब मांगेगी।

नशा पंजाब की युवा पीढ़ी को खत्म कर रहा है। जो लोग नशे के खिलाफ लड़ रहे हैं, उन्हें गोलियों से नहीं, सुरक्षा से नवाजा जाना चाहिए।

परिवहन विशेष की मांग:

- इस हत्या की निष्पक्ष CBI जांच हो

- नशा माफियाओं के पूरे नेटवर्क का भंडाफोड़ हो

- नशा विरोधी कार्यकर्ताओं को सुरक्षा दी जाए

- मेडिकल स्टोरों पर नशीली दवाओं की बिक्री की फॉरेंसिक जांच हो

शहीद परविंदर सिंह झोटा को श्रद्धांजलि — उनकी आवाज़ दबाई नहीं जा सकती।

जय हिंद, जय पंजाब, नशा मुक्त पंजाब।

— संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक। पिंकी कुंडू, सह संपादक

परिवहन विशेष RNI DELHIN/2023/86499



संपादकीय

चिंतन-मनन

पौधों के विकास को महसूस कीजिए:

प्रकृति के चमत्कारों को जानने का अवसर



डॉ. विजय गर्ग
रिटायर्ड प्रिंसिपल |
एमिनेंट साइंटिस्ट

पौधों का विकास सामान्यतः इतना धीमा होता है कि हम उसे पल-पल होते हुए नहीं देख पाते। लेकिन यदि हम नियमित रूप से किसी पौधे का निरीक्षण करें, तो उसके विकास में होने वाले परिवर्तनों को पहचान सकते हैं और प्रकृति से गहरा जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। किसी छोटे पौधे की ऊँचाई हर कुछ दिनों में मापिए। नई पत्तियों के निकलने, तने के मोटा होने और जड़ों के विकसित होने पर ध्यान दीजिए। देखिए कि उसकी पत्तियाँ सूर्य के प्रकाश के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करती हैं और पानी देने के बाद उसमें क्या बदलाव आता है।



पौधे प्रकृति की सबसे अद्भुत रचनाओं में से हैं। वे चुपचाप बढ़ते रहते हैं और अक्सर हमें उनके विकास का पता ही नहीं चलता। एक छोटा-सा बीज जड़ें निकालता है, मिट्टी से बाहर अंकुरित होता है, सूर्य के प्रकाश की ओर बढ़ता है और धीरे-धीरे पत्तियों से भरपूर एक पौधे का रूप ले लेता है। यह यात्रा केवल एक जैविक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि धैर्य, संघर्ष, अनुकूलन और जीवन की परस्पर निर्भरता का सुंदर संदेश भी देती है।

पौधों के विकास को महसूस करने का अर्थ है प्रकृति को ध्यान से देखना, उसकी गति को समझना और पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने वाली अद्भुत प्रक्रियाओं की सराहना करना।

एक छोटे बीज से जीवित पौधे तक

प्रत्येक विशाल वृक्ष का जीवन कभी एक छोटे-से बीज से ही शुरू हुआ था। उस बीज के भीतर एक नए पौधे के विकास की क्षमता छिपी होती है। जब उसे पर्याप्त नमी, ऑक्सीजन और अनुकूल तापमान मिलता है, तो अंकुरण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। बीज का आवरण नरम पड़ता है, जड़ बाहर निकलती है और मिट्टी में फैलने लगती है, जबकि अंकुर मिट्टी की सतह की ओर बढ़ता है।

धीरे-धीरे पहली पत्तियाँ खुलती हैं और सूर्य का प्रकाश ग्रहण करती हैं। प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया द्वारा पौधा सूर्य के प्रकाश, पानी और कार्बन डाइऑक्साइड की सहायता से अपना भोजन बनाता है। समय के साथ उसकी जड़ें फैलती हैं, तना मजबूत होता है और नई पत्तियाँ निकलने लगती हैं।

यह परिवर्तन हमें सिखाता है कि प्रकृति की महान उपलब्धियों की शुरुआत भी छोटे-छोटे कदमों से होती है।

क्या हम वास्तव में पौधों को बढ़ते हुए महसूस कर सकते हैं?

पौधों का विकास सामान्यतः इतना धीमा होता है कि हम उसे पल-पल होते हुए नहीं देख पाते। लेकिन यदि हम नियमित रूप से किसी पौधे का निरीक्षण करें, तो उसके विकास में होने वाले परिवर्तनों को पहचान सकते हैं और प्रकृति से गहरा जुड़ाव महसूस कर सकते हैं।

किसी छोटे पौधे की ऊँचाई हर कुछ दिनों में मापिए। नई पत्तियों के निकलने, तने के मोटा होने और जड़ों के विकसित होने पर ध्यान दीजिए। देखिए कि उसकी पत्तियाँ सूर्य के प्रकाश के प्रति कैसी प्रतिक्रिया करती हैं और पानी देने के बाद उसमें क्या बदलाव आता है।

कुछ पौधों में ऐसी गतियाँ भी दिखाई देती हैं जिन्हें अपेक्षाकृत कम समय में देखा जा सकता है। सूरजमुखी की पत्तियाँ और विकसित होते फूल प्रकाश की दिशा के अनुसार अपनी स्थिति बदल सकते हैं। कुछ पौधों की पत्तियाँ स्पर्श करने पर स्पष्ट प्रतिक्रिया देती हैं। ये गतिविधियाँ बताती हैं कि पौधे जीवित प्राणी हैं और अपने आसपास के वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं।

यद्यपि पौधों में मनुष्यों की तरह मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र नहीं होता, फिर भी वे प्रकाश, गुरुत्वाकर्षण, नमी, तापमान और अन्य पर्यावरणीय संकेतों को पहचानकर प्रतिक्रिया देते हैं।

मिट्टी के नीचे छिपी जड़ों की दुनिया

पौधे के विकास का एक बड़ा हिस्सा मिट्टी के नीचे होता है, जिसे हम आसानी से देख नहीं पाते। जड़ें मिट्टी में फैलकर पानी और आवश्यक खनिजों को अवशोषित करती हैं। जड़ों पर मौजूद सूक्ष्म रोम अवशोषण के लिए सतह का क्षेत्र बढ़ाते हैं, जबकि जड़ों के अग्रभाग आसपास की मिट्टी में आगे बढ़ते हैं।

स्वस्थ जड़ें पौधे को मिट्टी में मजबूती से टिकाए रखती हैं और बदलती पर्यावरणीय परिस्थितियों में जीवित रहने में सहायता करती हैं। उनका विकास मिट्टी की नमी, पोषक तत्त्वों, ऑक्सीजन और मिट्टी की बनावट पर निर्भर करता है।

विद्यार्थी एक सरल प्रयोग के माध्यम से इस छिपी हुई प्रक्रिया को समझ सकते हैं। अंकुरित होने वाले सेम या चने के बीज को एक पारदर्शी पात्र में नम रुई या कागज के बीच रखिए। कई दिनों तक जड़ और अंकुर के निकलने की प्रक्रिया को देखिए। माध्यम को नम रखें, लेकिन उसमें अत्यधिक पानी जमा न होने दें। पौधे को अनुकूल तापमान भी उपलब्ध कराएँ।

यह छोटा-सा प्रयोग कक्षा के सामान्य पाठ को रोचक वैज्ञानिक खोज में बदल सकता है।

प्रकाश, पानी और प्रकृति की भाषा

पौधे अपने वातावरण के प्रति लगातार प्रतिक्रिया करते हैं। प्रकाश संश्लेषण के लिए सूर्य का प्रकाश ऊर्जा प्रदान करता है, जबकि पानी आवश्यक रासायनिक प्रक्रियाओं में सहायता करता है और पौधों की कोशिकाओं को उचित दृढ़ता बनाए रखने में मदद करता है। मिट्टी से मिलने वाले खनिज नए ऊतकों और कोशिकाओं के निर्माण में योगदान देते हैं।

पानी की कमी से पौधे मुरझा सकते हैं, जबकि अत्यधिक पानी जड़ों तक ऑक्सीजन पहुँचने में बाधा उत्पन्न कर सकता है। पर्याप्त प्रकाश न मिलने से विकास कमजोर हो सकता है और अत्यधिक तापमान पौधों के ऊतकों को नुकसान पहुँचा सकता है।

इन परिवर्तनों को देखकर हम समझते हैं कि पौधों के विकास के लिए संतुलन आवश्यक है। प्रकृति में विकास किसी एक कारक पर निर्भर नहीं करता, बल्कि अनेक परिस्थितियों के परस्पर प्रभाव से होता है।

पौधों में प्रकाशानुवर्तन भी पाया जाता है, जिसमें तने और अंकुर प्रकाश की दिशा में बढ़ते हैं। इसी प्रकार, गुरुत्वानुवर्तन के कारण जड़ें और तने गुरुत्वाकर्षण के प्रति अपनी प्रतिक्रिया के अनुसार बढ़ते हैं। ये प्रक्रियाएँ पौधों को अपने वातावरण में सही दिशा में विकसित होने में सहायता करती हैं।

पौधे हमें धैर्य और संघर्ष करना सिखाते हैं

आज की तेज गति वाली दुनिया में, जहाँ लोग तुरंत परिणाम चाहते हैं, पौधों का विकास हमें याद दिलाता है कि वास्तविक विकास में समय लगता है। एक बीज रातोंरात वृक्ष नहीं बन सकता। उसे अनुकूल परिस्थितियों, निरंतर देखभाल और पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है।

पौधे हमें परिस्थितियों के अनुसार ढलने की क्षमता का भी परिचय देते हैं। अनेक पौधे प्रकाश, पानी की उपलब्धता और तापमान में बदलाव के अनुसार अपने विकास में परिवर्तन कर सकते हैं। कुछ पौधे सूखे के दौरान पानी की हानि कम कर देते हैं, जबकि अन्य अपनी विशेष जड़ों या पत्तियों की सहायता से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करते हैं।

हालाँकि, इस अनुकूलन की भी सीमाएँ हैं। लंबे समय तक सूखा, अत्यधिक गर्मी, प्रदूषण और प्राकृतिक आवासों का विनाश पौधों के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकते हैं। यह समझ हमें प्राकृतिक आवासों की रक्षा करने और संसाधनों का जिम्मेदारी से उपयोग करने के लिए प्रेरित करती है।

पौधे उगानाः बच्चों के लिए सीखने का अनूठा अवसर

बागवानी बच्चों के लिए विज्ञान को सरल, रोचक और व्यावहारिक बना सकती है। जब विद्यार्थी बीज बोते हैं, पौधों को पानी देते हैं, उनके विकास का रिकॉर्ड रखते हैं और अलग-अलग परिस्थितियों में उगने वाले पौधों की तुलना करते हैं, तो वे प्रत्यक्ष अनुभव से सीखते हैं।

घर या विद्यालय का छोटा-सा बगीचा एक जीवंत प्रयोगशाला बन सकता है। विद्यार्थी अलग-अलग मात्रा में प्रकाश प्राप्त करने वाले पौधों की तुलना कर सकते हैं, जड़ों के विकास को देख सकते हैं और हर सप्ताह निकलने वाली नई पत्तियों की संख्या दर्ज कर सकते हैं।

ऐसी गतिविधियाँ जिज्ञासा, सूक्ष्म निरीक्षण, वैज्ञानिक सोच और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करती हैं। इनसे बच्चों को यह समझने में भी मदद मिलती है कि हमारा भोजन कहाँ से आता है और मिट्टी, पानी, सूर्य का प्रकाश तथा जैव विविधता जीवन के लिए क्यों आवश्यक हैं।

शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चों को केवल तथ्य याद करने के बजाय प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अंकुर खिड़की की ओर क्यों झुकता है? पानी की कमी होने पर पत्तियाँ क्यों मुरझा जाती हैं? कुछ बीज दूसरे बीजों की तुलना में जल्दी क्यों अंकुरित होते हैं? ऐसे प्रत्येक प्रश्न से नई वैज्ञानिक खोज की शुरुआत हो सकती है।

पौधे और हमारे ग्रह का भविष्य

प्रकाश संश्लेषण के दौरान पौधे कार्बन डाइऑक्साइड ग्रहण करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वे अनेक खाद्य शृंखलाओं का आधार हैं। वन, घास के मैदान, आर्द्रभूमियाँ और अन्य वनस्पति-समृद्ध पारिस्थितिक तंत्र जैव विविधता को सहारा देते हैं, मिट्टी की रक्षा करते हैं और जलचक्र को संतुलित रखने में योगदान देते हैं।

पेड़ छाया प्रदान करते हैं, स्थानीय तापमान को कम करने में मदद करते हैं और पक्षियों तथा अन्य जीवों को आवास उपलब्ध कराते हैं। स्वस्थ वनस्पति मिट्टी के कटाव को कम करने और पर्यावरण को अधिक सक्षम बनाने में भी सहायक होती है।

लेकिन वनों की कटाई, प्रदूषण, भूमि का अस्थिर उपयोग और जलवायु परिवर्तन दुनिया के अनेक क्षेत्रों में पौधों की विविधता के लिए खतरा बन रहे हैं। मौजूदा वनस्पति की रक्षा करना, क्षतिग्रस्त पारिस्थितिक तंत्रों को पुनर्स्थापित करना और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल देशी प्रजातियों के पौधे लगाना स्वस्थ पर्यावरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम हैं।

एक पौधा लगाना अच्छी शुरुआत है, लेकिन उसे बड़ा होने तक नियमित रूप से सँभालना भी उतना ही आवश्यक है।

निरीक्षण करें, देखभाल करें और प्रकृति से जुड़ें

पौधे का विकास प्रकृति का एक शांत चमत्कार है, जिसे विज्ञान के माध्यम से समझा जा सकता है और प्रत्यक्ष अनुभव से और भी सुंदर बनाया जा सकता है। एक छोटा बीज संभावनाओं का संदेश देता है, बढ़ती हुई जड़ निरंतर प्रयास का उदाहरण प्रस्तुत करती है और फैलती हुई शाखाएँ समय तथा देखभाल का महत्त्व समझाती हैं।

इस अनुभव के लिए बड़े बगीचे की आवश्यकता नहीं है। खिड़की पर रखा एक छोटा गमला, पारदर्शी पात्र में रखा बीज या पड़ोस में लगा कोई पेड़ भी सीखने और प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

प्रतिदिन कुछ मिनट किसी पौधे को देखने के लिए निकालिए। नई पत्ती को पहचानिए, उसके आकार में होने वाले बदलावों पर ध्यान दीजिए और मिट्टी की नमी को महसूस कीजिए। अपने निरीक्षणों को लिखिए और देखिए कि समय के साथ क्या बदलता है तथा क्या समान बना रहता है। धीरे-धीरे ये छोटे-छोटे अनुभव प्रकृति के प्रति आपकी समझ और सम्मान को गहरा कर सकते हैं।

पौधों के विकास को महसूस करना जीवन की प्राकृतिक लय से दोबारा जुड़ने जैसा है। जब हम पौधों को देखना और समझना सीखते हैं, तो प्रकृति का सम्मान करना सीखते हैं; और जब हम उनका पालन-पोषण करते हैं, तो अपने ग्रह के भविष्य को सँवारने में योगदान देते हैं।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य | शैक्षिक स्तंभकार | प्रख्यात वैज्ञानिक गली कौर चंद, एम.एच.आर.,

हर भाषा के लुप्त होने से एक संसार मिट जाता है

डॉ. विजय गर्ग

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह किसी समुदाय के इतिहास, संस्कृति, परंपराओं, ज्ञान और सामूहिक स्मृतियों का जीवंत भंडार है। प्रत्येक भाषा दुनिया को समझने का एक अनूठा दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। जब कोई भाषा लुप्त हो जाती है, तो मानवता केवल कुछ शब्द नहीं खोती, बल्कि विचारों, अनुभवों और सांस्कृतिक ज्ञान का एक पूरा संसार खो बैठती है।

दुनियाभर में बोली जाने वाली हजारों भाषाएँ मानव सभ्यता की अद्भुत विविधता को दर्शाती हैं। लेकिन आज अनेक भाषाएँ विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं, क्योंकि नई पीढ़ी शिक्षा, रोजगार और सामाजिक उन्नति के लिए अधिक प्रचलित भाषाओं को अपना रही है। इसके परिणामस्वरूप छोटे समुदायों की भाषाएँ धीरे-धीरे दैनिक जीवन से गायब होती जा रही हैं।

हर भाषा में पीढ़ियों का संचित ज्ञान समाहित होता है। औषधीय पौधों, कृषि, मौसम, जंगलों, जीव-जंतुओं और स्थानीय पारिस्थितिकी से जुड़ी पारंपरिक जानकारी अक्सर स्थानीय शब्दों, मुहावरों, गीतों और कहानियों में संरक्षित रहती है। जब कोई भाषा समाप्त हो जाती है, तो इस ज्ञान के बड़े हिस्से को दोबारा प्राप्त करना कठिन हो सकता है। यह क्षति केवल सांस्कृतिक नहीं होती, बल्कि वैज्ञानिक समझ और प्रकृति के साथ हमारे संबंधों को भी प्रभावित करती है।

भाषा का संबंध हमारी पहचान और अपनेपन की भावना से भी गहराई से जुड़ा है। मातृभाषा बच्चों को अपने दादा-दादी और नाना-नानी से संवाद करने, पारिवारिक परंपराओं को समझने तथा अपनी जड़ों से जुड़े रहने में सहायता करती है। लोकगीत, कहावतें, लोरियाँ, लोककथाएँ और मौखिक इतिहास ऐसी भावनाओं एवं अनुभवों को संजोते हैं, जिन्हें किसी दूसरी भाषा में पूरी तरह व्यक्त करना हमेशा संभव नहीं होता। प्रत्येक भाषाई समुदाय मानवता की साझा कहानी में अपनी विशिष्ट आवाज जोड़ता है।

वैश्वीकरण, पलायन, शहरीकरण और प्रमुख भाषाओं के बढ़ते प्रभाव ने भाषाओं के लुप्त होने की प्रक्रिया को तेज कर दिया है। अनेक परिवारों में माता-पिता बच्चों को केवल अधिक प्रचलित भाषाएँ बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि इससे बच्चों की शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। दूसरी भाषाएँ सीखना निस्संदेह उपयोगी है, लेकिन प्रगति की कीमत अपनी मातृभाषा को त्यागना नहीं होनी चाहिए।

इस प्रवृत्ति को रोकने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विशेषकर प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को अपनी मातृभाषा में सीखने के अवसर मिलने चाहिए। विद्यालयों में कहानी सुनाने के सत्र, स्थानीय भाषाओं में साहित्यिक गतिविधियाँ, लोकगीत प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। पुस्तकालय क्षेत्रीय साहित्य को संरक्षित कर सकते हैं, जबकि डिजिटल मंच ऑडियो, वीडियो, शब्दकोशों और ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों के माध्यम से संकटग्रस्त भाषाओं को सुरक्षित रखने तथा उनके प्रसार में सहायता कर सकते हैं।

सरकारों, विश्वविद्यालयों, लेखकों, शोधकर्ताओं और सामाजिक संगठनों को संकटग्रस्त भाषाओं का दस्तावेजीकरण करने तथा उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। लेकिन सबसे बड़ी जिम्मेदारी संबंधित समुदायों की अपनी है। कोई भाषा तभी जीवित रहती है, जब लोग उसे घरों में बोलते हैं, दैनिक जीवन में उपयोग करते हैं, उसमें साहित्य रचते हैं और अगली पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। दस्तावेजीकरण महत्वपूर्ण है, लेकिन भाषा का जीवंत संवाद का माध्यम बने रहना भी आवश्यक है।

तकनीक इस प्रयास में एक शक्तिशाली सहयोगी बन सकती है। डिजिटल शब्दकोश, अनुवाद के साधन, भाषा सीखने वाले ऐप, पॉडकास्ट और ऑनलाइन अभिलेखागार युवाओं को अपनी भाषाई विरासत से दोबारा जोड़ सकते हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी भाषा संरक्षण में सहायता कर सकती है, बशर्ते संबंधित समुदायों का अपने ज्ञान और सांस्कृतिक संसाधनों पर अधिकार बना रहे।

भाषाई विविधता की रक्षा करने का अर्थ प्रगति का विरोध करना या दूसरी भाषाएँ सीखने से इनकार करना नहीं है। बहुभाषिकता व्यक्ति और समाज दोनों को समृद्ध बनाती है। कोई व्यक्ति वैश्विक संवाद के लिए अंग्रेजी सीख सकता है, व्यापक सांस्कृतिक संपर्क के लिए हिंदी या पंजाबी अपना सकता है और साथ ही अपनी स्थानीय अथवा पैतृक भाषा को गर्व से बोल सकता है। वास्तविक उद्देश्य ऐसा संसार बनाना है, जहाँ भाषाएँ अस्तित्व के लिए एक-दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने के बजाय एक-दूसरे की पूरक बनें।

हर लुप्त होती भाषा मानवता की सांस्कृतिक संपदा को कम करती है। जब किसी भाषा का अंतिम धाराप्रवाह वक्ता मौन हो जाता है, तो उसके साथ कौन-सा ज्ञान, रचनात्मकता और सोचने के अनूठे तरीके समाप्त हो जाते हैं, इसका हमें शायद कभी पूरी तरह पता न चल सके। इसलिए संकटग्रस्त भाषाओं की रक्षा केवल अतीत की स्मृतियों को बचाने का प्रयास नहीं, बल्कि मानव ज्ञान, गरिमा और विविधता में निवेश है।

भाषा तभी जीवित रहती है, जब उसे बोला, गाया, लिखा, सिखाया और प्रेम किया जाता है। आइए, बच्चों को अपनी मातृभाषा से प्रेम करना सिखाएँ, स्थानीय साहित्य को प्रोत्साहित करें और प्रत्येक भाषाई समुदाय का सम्मान करें। मानवता को एक-दूसरे के करीब आने के लिए कम भाषाओं की आवश्यकता नहीं है, बल्कि विभिन्न भाषाओं के बीच अधिक समझ, सहयोग और सम्मान की आवश्यकता है।

जब कोई भाषा मरती है, तो एक संसार मिट जाता है। जब कोई भाषा जीवित रहती है, तो मानवता का एक अनूठा हिस्सा भी जीवित रहता है।

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्राचार्य। शिक्षाविद् एवं प्रख्यात वैज्ञानिक

विज्ञान प्रसार: जिज्ञासा, ज्ञान और नवाचार का सेतु

(जन-जन में विज्ञान, जीवन में प्रगति)

डॉ. विजय गर्ग

विज्ञान आधुनिक विश्व को आकार देने वाली सबसे शक्तिशाली शक्तियों में से एक है। स्वास्थ्य, कृषि, संचार, शिक्षा और पर्यावरण संरक्षण से लेकर जीवन के लगभग हर क्षेत्र में वैज्ञानिक खोजों का प्रभाव दिखाई देता है। लेकिन विज्ञान का वास्तविक महत्व केवल नई खोजें करने में नहीं, बल्कि वैज्ञानिक ज्ञान को सरल, सार्थक और उपयोगी रूप में आम लोगों तक पहुँचाने में है। यहीं विज्ञान प्रसार की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आती है।

विज्ञान प्रसार प्रयोगशालाओं, अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों को सामान्य नागरिकों से जोड़ने वाला सेतु है। यह जटिल वैज्ञानिक विचारों को सरल भाषा में प्रस्तुत करता है तथा लोगों को अवलोकन, प्रमाण और तार्किक चिंतन के आधार पर दुनिया को समझने के लिए प्रेरित करता है। जब विज्ञान प्रत्येक घर तक पहुँचता है, तब वह जागरूकता, सशक्तीकरण और सामाजिक प्रगति का माध्यम बन जाता है।

जिज्ञासाः वैज्ञानिक सोच की शुरुआत

प्रत्येक वैज्ञानिक खोज की शुरुआत एक प्रश्न से होती है। वर्षा क्यों होती है? पौधे अपना भोजन कैसे बनाते हैं? बीमारियाँ कैसे फैलती हैं? स्वच्छ ऊर्जा प्रदूषण को कैसे कम कर सकती है? ऐसे प्रश्न प्राकृतिक जिज्ञासा को दर्शाते हैं, जो वैज्ञानिक प्रगति की प्रेरक शक्ति है।

बच्चे अपने आसपास की दुनिया के प्रति विशेष रूप से जिज्ञासु होते हैं। उनके प्रश्नों को प्रोत्साहित करना, प्रयोग करने के अवसर देना और स्वयं उत्तर खोजने में सहायता करना उनमें विज्ञान के प्रति आजीवन रुचि विकसित कर सकता है। विद्यालयों, पुस्तकालयों, विज्ञान क्लबों, संग्रहालयों और शैक्षिक कार्यक्रमों में केवल रटने के बजाय व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए।

शिक्षकों और विज्ञान संचारकों की विशेष जिम्मेदारी है कि वे बच्चों की जिज्ञासा को विकसित करें। उन्हें वैज्ञानिक अवधारणाओं को सरल भाषा में समझाना चाहिए, दैनिक जीवन से जोड़ना चाहिए और विद्यार्थियों को आगे खोज करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

समाज के लिए उपयोगी वैज्ञानिक ज्ञान

वैज्ञानिक ज्ञान तभी सार्थक बनता है, जब वह लोगों के जीवन को बेहतर बनाता है। पोषण, टीकाकरण, स्वच्छता और रोगों की रोकथाम से संबंधित जानकारी परिवारों को स्वास्थ्य संबंधी सही निर्णय लेने में सहायता करती है। मिट्टी की गुणवत्ता, मौसम पूर्वानुमान, जल संरक्षण और आधुनिक कृषि तकनीकों का ज्ञान किसानों की उत्पादकता बढ़ाने के साथ प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा में भी सहायक हो सकता है।

इसी प्रकार, जलवायु परिवर्तन, वायु प्रदूषण, जैव विविधता और नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में जन-जागरूकता पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित करती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल या प्राकृतिक आपदा के समय सही वैज्ञानिक जानकारी भय, भ्रम और अफवाहों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

सोशल मीडिया के युग में भ्रामक सूचनाएँ और छद्म वैज्ञानिक दावे तेजी से फैल सकते हैं। इसलिए वैज्ञानिक जानकारी सटीक, निष्पक्ष और पारदर्शी होनी चाहिए। लोगों को प्रमाणों की जाँच करने, स्रोतों की पुष्टि करने और स्थापित वैज्ञानिक तथ्यों तथा अटकलों के बीच अंतर समझने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है।

नवाचारः विचारों से समाधान तक

जब वैज्ञानिक ज्ञान का मेल कल्पनाशीलता, व्यावहारिक कौशल और सामाजिक आवश्यकताओं से होता है, तब नवाचार को बढ़ावा मिलता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जैव प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान, नवीकरणीय ऊर्जा और डिजिटल तकनीक में हो रहे विकास इसके महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

हालाँकि, नवाचार का लाभ केवल बड़े अनुसंधान केंद्रों या संपन्न समुदायों तक सीमित नहीं रहना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों, वंचित वर्गों और सामान्य नागरिकों तक भी इसका लाभ पहुँचना आवश्यक है। किफायती तकनीकें, स्थानीय समस्याओं के समाधान और सुलभ शैक्षिक संसाधन प्रगति को समावेशी बना सकते हैं।

विज्ञान प्रसार युवाओं को अनुसंधान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में करियर बनाने के लिए भी प्रेरित करता है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ उनकी खोज-प्रक्रिया को समझाकर विद्यार्थियों को बताया जा सकता है कि विज्ञान केवल तथ्यों का संग्रह नहीं, बल्कि निरंतर खोज और सीखने की यात्रा है।

विज्ञान को प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना

विज्ञान प्रसार को मजबूत बनाने के लिए सरकारों, शैक्षिक संस्थानों, वैज्ञानिकों, पत्रकारों और सामाजिक संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए। समाचार-पत्रों में लेख, रेडियो और टेलीविजन कार्यक्रम, डिजिटल मंच, सार्वजनिक व्याख्यान, प्रदर्शनियाँ तथा सामुदायिक कार्यशालाएँ वैज्ञानिक ज्ञान को आम लोगों के करीब ला सकती हैं।

विज्ञान का प्रसार अंग्रेजी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं में भी होना चाहिए। जब लोगों को वैज्ञानिक जानकारी अपनी मातृभाषा में मिलती है, तो वे जटिल विचारों को अधिक आसानी से समझ सकते हैं और दैनिक जीवन में उनका उपयोग कर सकते हैं। डिजिटल पुस्तकालय तथा निःशुल्क ऑनलाइन अध्ययन सामग्री भी ज्ञान तक पहुँचने की बाधाओं को कम कर सकती हैं।

वैज्ञानिकों को भी समाज के साथ सीधे संवाद करना चाहिए। उन्हें अपनी खोजों के साथ-साथ अनुसंधान की सीमाओं, अनिश्चितताओं और व्यावहारिक प्रभावों को भी स्पष्ट करना चाहिए। ईमानदार, सरल और प्रश्नों के लिए खुली वैज्ञानिक जानकारी से जनता का विश्वास मजबूत होता है।

निष्कर्ष

विज्ञान प्रसार केवल जानकारी देने की प्रक्रिया नहीं है। यह जिज्ञासा विकसित करता है, आलोचनात्मक चिंतन को बढ़ावा देता है, भ्रामक सूचनाओं का मुकाबला करता है और ज्ञान को मानवीय आवश्यकताओं से जोड़ता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संपन्न समाज बेहतर निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल बनने में अधिक सक्षम होता है।

ब्राह्मणी नदी के पानी में बढ़ता प्रदूषण, पानपोष और जलदा में चिंताजनक स्थिति



सीवेज ट्रीटमेंट की अधूरी व्यवस्था से नदियों पर बढ़ रहा दबाव, जांच रिपोर्ट में कोलीफॉर्म बैक्टीरिया की भयावह मौजूदगी; लाखों लोगों के जलस्रोतों की सुरक्षा पर सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

औद्योगिक नगरी राउरकेला से होकर बहने वाली ब्राह्मणी नदी के जल की गुणवत्ता में गिरावट ने पर्यावरण और जनस्वास्थ्य को लेकर गंभीर चिंता पैदा कर दी है। राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़ों पर आधारित रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में पानपोष और जलदा के डाउनस्ट्रीम क्षेत्रों में नदी के पानी में जैविक प्रदूषण तथा कोलीफॉर्म बैक्टीरिया की मौजूदगी चिंताजनक स्तर पर दर्ज की गई। शहर से निकलने वाले गंदे पानी का शत-प्रतिशत शोधन नहीं हो पाना इस समस्या की प्रमुख वजहों में शामिल बताया गया है।

पानपोष और जलदा में प्रदूषण के आंकड़े चिंताजनक उपलब्ध रिपोर्ट के अनुसार, पानपोष डाउनस्ट्रीम में पानी का पीएच 7.7, घुलित ऑक्सीजन (डीओ) 5.6 मिलीग्राम प्रति लीटर और जैव-रासायनिक ऑक्सीजन मांग (बीओडी) 4.1 मिलीग्राम प्रति लीटर दर्ज की गई। जलदा में ये आंकड़े क्रमशः 7.3, 5.8 और 3.5 मिलीग्राम प्रति लीटर रहे।

सबसे गंभीर स्थिति गुराडीह नाले में बताई गई, जहां कुल कोलीफॉर्म बैक्टीरिया की संख्या 1,07,500 और फीकल कोलीफॉर्म की संख्या 71,142 प्रति 100 मिलीलीटर दर्ज की गई। पानपोष में कुल कोलीफॉर्म 25,450 और फीकल कोलीफॉर्म



9,267, जबकि जलदा में क्रमशः 13,508 और 4,144 दर्ज किए गए।

40 एमएलडी प्लांट के बावजूद अधूरा शोधन रिपोर्ट के मुताबिक, बालूघाट के रुपुटोला में 40 एमएलडी क्षमता वाला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट स्थापित है। इसके बावजूद शहर की लगभग 185 किलोमीटर लंबी सीवरेज व्यवस्था से निकलने वाले पूरे अपशिष्ट जल का शोधन नहीं हो पा रहा है। नतीजतन, अशोधित गंदा पानी कोयल और ब्राह्मणी नदियों में पहुंच रहा है।

जनस्वास्थ्य और प्रशासनिक जवाबदेही पर सवाल ब्राह्मणी नदी सुंदरगढ़ सहित देवगढ़, अनुगुल, ढेंकानाल, कटक, जाजपुर और केंद्रापड़ा जिलों के लिए भी महत्वपूर्ण जलस्रोत है। दूषित पानी का बिना पर्याप्त शोधन उपयोग संक्रमण संबंधी जोखिम बढ़ा सकता है। हालांकि, वास्तविक स्वास्थ्य जोखिम का आकलन स्थानीय जलापूर्ति और उपचार व्यवस्था की जांच से ही संभव है।

अब जरूरत है कि प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, नगर निकाय और संबंधित विभाग सीवेज शोधन की वास्तविक क्षमता, नालों के निकास तथा नदी के पानी की नियमित जांच सार्वजनिक करें। केवल संयंत्र स्थापित करना पर्याप्त नहीं; उसका प्रभावी संचालन और अशोधित अपशिष्ट के प्रवाह पर रोक ही ब्राह्मणी नदी को प्रदूषण से बचाने की दिशा में निर्णायक कदम होंगे।

आर.डी.एम. सरस्वती पब्लिक स्कूल में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को किया नमन।



पुष्प अर्पित कर मिसाइल मैन को किया याद, विद्यार्थियों को दी प्रेरणादायक विचारों की सीख।

हरियाणा हिसार// राजेश सलूजा

आर.डी.एम. सरस्वती पब्लिक स्कूल में 15 अक्टूबर 2026 को भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के जन्म दिवस के अवसर पर उन्हें पुष्प अर्पित कर श्रद्धापूर्वक नमन किया गया। इस अवसर पर उनके महान व्यक्तित्व, वैज्ञानिक उपलब्धियों, सादगी और राष्ट्र के प्रति समर्पण को याद किया गया। डॉ. कलाम का जीवन विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनका मानना था कि सपने वे नहीं होते जो सोते समय आते हैं, बल्कि सपने वे होते हैं जो हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्कूल प्रबंधक डॉ. के.सी. शर्मा ने अपने संदेश में कहा कि डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम का जीवन मेहनत, अनुशासन, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प का प्रतीक है। विद्यार्थियों को उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए तथा देश के विकास में योगदान देने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।

प्रधानाचार्या डॉ. शालू एस. कटारिया ने कहा कि डॉ. कलाम सदैव युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे। उनके विचार विद्यार्थियों को बड़े सपने देखने, ज्ञान प्राप्त करने और अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार अपनाने और एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया।

कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को डॉ. कलाम के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने तथा राष्ट्र की प्रगति में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का संदेश दिया गया।

नव श्री केशव रामलीला कमेटी

रामलीला के पांचवें दिन केवट संवाद, दशरथ मरण व चित्रकूट मिलाप के मंचन का लोगों ने जमकर उठाया आनंद



परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्लीः राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने भगवान गणेश के आहवान के साथ ही दस दिन तक चलने वाली नव श्री केशव रामलीला कमेटी के पांचवें दिन केवट संवाद, दशरथ मरण व चित्रकूट मिलाप के मंचन को लोगों ने जमकर आनंद उठाया। इस भावपूर्ण लीला के दर्शन करके दर्शक भावविभोर हो गए। दर्शकों ने अपने स्थान पर खड़े होकर इन कलाकारों का जोरदार तालियों से इनका हौसला बढ़ाया। मंच पर 120 फीट का विशाल एलईडी स्क्रीन पर श्रीडी एनीमेशन के द्वारा मंचन के दौरान जंगल, पहाड़, नंदियां आदि का दृश्य देख दर्शक अभिभूत हो उठे।

इस अवसर पर नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने बताया कि जब केवट भगवान के चरण धोता है, चरण धोकर नाव में श्री राम लक्ष्मण, सीता का बैठाता है। केवट श्री राम-लक्ष्मण, सीता को गंगा पार उतार देता है। भगवान श्री राम नाव में उतारवाई देते हैं। केवट उतराई नहीं लेता है। वह कहते है कि प्रभु जब मै आपके द्वार आऊं, तो भवसागर से पार लगा देना। गंगा पार के बाद श्री राम लक्ष्मण और माता सीता ने चित्रकूट में जाकर डेरा डाल देते है। वहां वह कुटिया बनाकर रहना शुरू कर देते हैं। उन्होंने बताया कि त्रिदेव थीम पर इस बार तीन मंजिला भव्य स्टेज पर लीला का मंचन हो रहा है।

इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्तोत्र व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, कार्यालय महामंत्री पुरुषोतम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।

यहां पर सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। सुरक्षा में प्राइवेट वालंटियर, सीसीटीवी कैमरा, हैंड मेटल डिटेक्टर के साथ दिल्ली पुलिस के जवान के नेतृत्व में सुरक्षा का इंतजाम है। मेले में हर प्रकार के झूले हैं, जो कि बच्चों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

राउरकेला में कथित नकली चावल कारोबार पर पुलिस का शिकंजा, दो गिरफ्तार; अंतरराज्यीय नेटवर्क की जांच तेज

करीब 400 बोरी संदिग्ध चावल जब्त होने के बाद कार्रवाई, जीएसटी और खाद्य सुरक्षा विभाग की भूमिका पर उठे सवाल

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला



खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य से जुड़े गंभीर सवालों के बीच राउरकेला में कथित नकली चावल कारोबार का मामला अब व्यापक जांच के दायरे में पहुंच गया है। पुलिस ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। करीब 400 बोरी संदिग्ध चावल की जब्ती के बाद पुलिस अंतरराज्यीय कड़ियों की पड़ताल कर रही है। इस कार्रवाई से जहां कथित गोरखधंधे के विरुद्ध सख्ती की उम्मीद जगी है, वहीं संबंधित निगरानी विभागों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठने लगे हैं।

राउरकेला के पुलिस अधीक्षक नितेश वाधवानी के अनुसार, दूसरे राज्यों में भी इस तरह की घटनाएं सामने आने की जानकारी मिली है। इसी आधार पर पुलिस संभावित अंतरराज्यीय नेटवर्क का पता लगाने में जुटी है। जांच का उद्देश्य कथित कारोबार की पूरी श्रृंखला, इसमें शामिल अन्य लोगों और चावल की आपूर्ति से जुड़े पहलुओं का खुलासा करना है।

पुलिस की सक्रियता से जगी उम्मीद, निगरानी व्यवस्था पर सवाल इस मामले में पुलिस की त्वरित कार्रवाई को आम उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। खाद्य पदार्थों में मिलावट या ब्रांड के कथित दुरुपयोग की आशंका सीधे जनता के भरोसे से जुड़ी है। ऐसे मामलों में पुलिस की कार्रवाई आवश्यक है, लेकिन केवल गिरफ्तारी और जब्ती से समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है।

इस प्रकरण ने जीएसटी विभाग तथा खाद्य सुरक्षा अधिकारियों की निगरानी व्यवस्था को लेकर भी सवाल खड़े किए हैं। यदि संदिग्ध कारोबार बड़े पैमाने पर चल रहा था, तो संबंधित आपूर्ति श्रृंखला, बिलिंग, व्यापारिक दस्तावेजों और खाद्य गुणवत्ता की जांच किस स्तर पर हुई? क्या नियमित निरीक्षण और बाजार निगरानी पर्याप्त थी? इन सवालों का जवाब संबंधित विभागों की पारदर्शी जांच और आधिकारिक स्पष्टीकरण से ही मिल सकता है। फिलहाल, उपलब्ध जानकारी के आधार पर अधिकारियों की मिलीभगत या लापरवाही को प्रमाणित तथ्य के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा।

उपभोक्ताओं को भरोसा दिलाना प्रशासन की जिम्मेदारी पुलिस अधीक्षक ने स्पष्ट किया है कि खाद्य पदार्थों में कथित अनियमितता या मिलावट की शिकायत मिलने पर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस की इस पहल से नागरिकों में राहत और कार्रवाई के प्रति भरोसा बढ़ने की उम्मीद है।

अब आवश्यक है कि खाद्य सुरक्षा विभाग चावल के नमूनों की वैज्ञानिक जांच, ब्रांड संबंधी दावों के सत्यापन और आपूर्ति श्रृंखला की पड़ताल में सक्रिय भूमिका निभाए। साथ ही जीएसटी विभाग व्यापारिक लेन-देन की जांच करे, जहां उसके अधिकार क्षेत्र में मामला आता हो। संदिग्ध चावल की प्रकृति और कारोबार के वास्तविक स्वरूप का खुलासा जांच रिपोर्ट के बाद ही हो सकेगा।

विश्व खाद्य दिवसः चुनौतियाँ, समाधान और भविष्य की राह (16 अक्टूबर विश्व खाद्य दिवस पर विशेष आलेख)

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार।

विश्व से भुखमरी दूर करने, खाद्य सुरक्षा को बनाए रखने और धरती के हर व्यक्ति को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से हर साल 16 अक्टूबर को विश्व खाद्य दिवस मनाया जाता है। दरअसल, यहां पर यह कहना ग़लत नहीं होगा कि भोजन मानव का मूल अधिकार है, क्योंकि पर्याप्त और पौष्टिक भोजन के बिना स्वस्थ जीवन, शिक्षा और कार्यक्षमता प्रभावित होती है। हमें यह भी अपने जेहन में रखना चाहिए कि खाद्य सुरक्षा का अर्थ केवल भोजन की उपलब्धता मात्र ही नहीं है, बल्कि इसमें भोजन तक नियमित पहुँच, उसे खरीदने की क्षमता, उसकी गुणवत्ता और पोषण को भी शामिल किया जाता हैं। वास्तव में, भूख और कुपोषण अलग-अलग समस्याएँ हैं तथा किसान खाद्य सुरक्षा की आधारशिला हैं।पाठक जानते हैं कि जलवायु परिवर्तन खाद्य उत्पादन को प्रभावित करता है, जहाँ सूखा, बाढ़, अनियमित वर्षा और बढ़ता तापमान फसलों की पैदावार तथा किसानों की आजीविका पर असर डाल सकते हैं। आज खाद्य बर्बादी और भूख का साथ-साथ बने रहना एक बड़ी विडंबना है। वास्तव में, भोजन का उचित भंडारण, परिवहन और वितरण इस समस्या को कम करने में सहायक हो सकता है। इसके अलावा मौसम की जानकारी, बेहतर सिंचाई, फसल प्रबंधन, भंडारण और खाद्य आपूर्ति की आधुनिक प्रणालियाँ कृषि को अधिक प्रभावी बना सकती हैं।

इस दिवस को मनाने के कारण व इस वर्ष की थीमः- विश्व खाद्य दिवस मनाने के पीछे कई प्रमुख उद्देश्य हैं। इनमें क्रमशः संपूर्ण विश्व से भूख और कुपोषण का उन्मूलन करना (जिसमें बच्चों, गर्भवती महिलाओं और कमजोर वर्गों के पोषण पर विशेष ध्यान देना शामिल है), किसानों की आय बढ़ाना, सिंचाई और आधुनिक कृषि तकनीक को बढ़ावा देना, तथा छोटे किसानों को संसाधन उपलब्ध कराना शामिल है। इसके साथ ही पौष्टिक और संतुलित आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करना, खाद्य पदार्थों की बर्बादी (होटलों, रेस्टोरेंटों, ढाबों, तथा घरों में) रोकना, मिट्टी, जल और जैव विविधता को बचाना तथा विश्व में ऐसी कृषि पद्धतियाँ अपनाने पर बल देना प्रमुख उद्देश्य हैं, जो कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी खाद्य उत्पादन सुनिश्चित कर सकें। हमें यह याद रखना चाहिए कि भोजन केवल और केवल हमारे जीवन की ही आवश्यकता नहीं है, अपितु यह प्रत्येक व्यक्ति के सम्मानपूर्ण जीवन का भी आधार है। आज दुनिया में पर्याप्त खाद्यान्न उत्पादन होता है, लेकिन बहुत ही दुखद है कि इसके बावजूद भी दुनिया में बहुत से लोगों को दो जून की रोटी तक नसीब नहीं हो पाती है और आज भी दुनिया में लाखों नहीं करोडों लोग भूख, कुपोषण और पौष्टिक भोजन की कमी से लगातार जूझ रहे हैं। दूसरी ओर, खाद्य पदार्थों की बर्बादी, जलवायु परिवर्तन, गरीबी और संसाधनों का असमान वितरण इस समस्या को और गंभीर तथा संवेदनशील बनाते हैं। इस वर्ष विश्व खाद्य दिवस 2026 की थीम-'आज नवाचार करें, कल का पोषण सुनिश्चित करें।' रखी गई है। वास्तव में इसका साफ संदेश यह है कि आधुनिक विज्ञान, नई तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के समन्वय से सभी के लिए पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक भोजन सुनिश्चित किया जाए तथा भविष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा की जाए।

भोजन को सुलभ, किफायती और पौष्टिक बनाना भी आवश्यकः- हाल फिलहाल विश्व खाद्य दिवस के संदर्भ में यदि हम आँकड़ों की बात करें तो संयुक्त राष्ट्र की पाँच एजेंसियों द्वारा जुलाई 2026 में जारी 'विश्व में खाद्य सुरक्षा एवं पोषण की स्थिति' रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में दुनिया भर में लगभग 64.5 करोड़ लोग भूख से प्रभावित थे, जो वैश्विक आबादी का लगभग 7.8 प्रतिशत है। इसी अवधि में लगभग 210 करोड़ लोग मध्यम या गंभीर खाद्य असुरक्षा का सामना कर रहे थे। रिपोर्ट के अनुसार, करीब 270 करोड़ लोग स्वस्थ आहार का खर्च उठाने में असमर्थ थे। हालाँकि, वैश्विक स्तर पर भूख से प्रभावित लोगों की संख्या में लगातार तीसरे वर्ष कमी दर्ज की गई, लेकिन यह सुधार सभी क्षेत्रों में समान नहीं रहा। ये आँकड़े स्पष्ट करते हैं कि दुनिया में खाद्य उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ भोजन को सुलभ, किफायती और पौष्टिक बनाना भी आवश्यक है। हमारे देश भारत में भुखमरी और कुपोषण आज भी बड़ी चुनौती हैं। वर्ष 2023 में देश में लगभग 17.21 करोड़ लोग अल्पपोषण से प्रभावित थे। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019–21) के अनुसार, पाँच वर्ष से कम उम्र के 35.5 प्रतिशत बच्चे ठिगनेपन, 32.1 प्रतिशत कम वजन और 19.3 प्रतिशत दुबलेपन से प्रभावित थे। यहाँ पाठकों को बताता चलूं कि भारत सरकार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत देश की लगभग 80.67 करोड़ आबादी को रियायती खाद्यान्न उपलब्ध कराने की व्यवस्था कर रही है। इस योजना के अंतर्गत पात्र प्राथमिकता वाले परिवारों को प्रति व्यक्ति प्रतिमाह 5



किलोग्राम तथा अंत्योदय अन्न योजना के परिवारों को प्रति परिवार प्रतिमाह 35 किलोग्राम खाद्यान्न निःशुल्क दिया जाता है। यह व्यवस्था देश की लगभग दो-तिहाई आबादी को खाद्य सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से बनाई गई है। इतना ही नहीं, सरकार विद्यालयों में पीएम पोषण योजना और आँगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों तथा महिलाओं के पोषण के लिए भी सहायता उपलब्ध कराती है।

प्रमुख विद्यमान चुनौतियांः- आज विश्व खाद्य दिवस पर संपूर्ण विश्व के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियाँ विद्यमान हैं। इनमें क्रमशः पूरी दुनिया से भुखमरी और कुपोषण को समाप्त करना, हर व्यक्ति को पर्याप्त और पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना, गरीबी के कारण भोजन की कमी और स्वस्थ आहार की बढ़ती लागत को कम करना, खाद्य पदार्थों की बर्बादी रोकना और जरूरतमंदों तक भोजन पहुँचाना शामिल है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन, सूखा और बाढ़ से कृषि उत्पादन की रक्षा करना, किसानों की आय बढ़ाना और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना तथा खाद्यान्न का समान वितरण सुनिश्चित कर वर्ष 2030 तक शून्य भुखमरी के लक्ष्य को प्राप्त करना आदि को भी इसमें शामिल किया जा सकता है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली और खाद्य सुरक्षाः- सार्वजनिक वितरण प्रणाली देश में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और गरीब परिवारों को भुखमरी से बचाने का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। इसके माध्यम से पात्र परिवारों को उचित मूल्य की दुकानों से निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाता है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लगभग 80 करोड़ लोगों को खाद्यान्न उपलब्ध कराने की व्यवस्था है, जो यह सुनिश्चित करती है कि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को भोजन के लिए संघर्ष न करना पड़े। विश्व खाद्य दिवस हमें याद दिलाता है कि भोजन केवल जीवन की आवश्यकता नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति का सम्मानपूर्ण जीवन जीने का आधार है। हालाँकि, खाद्य सुरक्षा का उद्देश्य केवल पेट भरना नहीं, बल्कि हर व्यक्ति तक पौष्टिक और संतुलित आहार पहुँचाना भी है। इसके लिए खाद्यान्न का पारदर्शी वितरण, बर्बादी पर रोक, किसानों को प्रोत्साहन और कुपोषण का उन्मूलन आवश्यक है। वास्तविक खाद्य सुरक्षा तभी सार्थक होगी, जब देश का कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए और प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त, सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो।

अंत में यही कहूंगा कि विश्व खाद्य दिवस केवल एक औपचारिक आयोजन मात्र ही नहीं है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर खाद्य सुरक्षा और भुखमरी के प्रति जागरूक होने का एक सशक्त संदेश है। इस आलेख में ऊपर चर्चा कर चुका हूं कि भोजन हर मनुष्य का मौलिक अधिकार है, फिर भी दुनिया भर में लाखों लोग कुपोषण और भुखमरी से जूझ रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए एक ओर जहाँ टिकाऊ कृषि, जल-संसाधनों के संरक्षण और हमारे अन्नदाताओं (किसानों) के कल्याण को प्राथमिकता देना आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर व्यक्तिगत स्तर पर भोजन की बर्बादी रोकना सबसे महत्वपूर्ण कदम है। 'जीरो हंगर' यानी कि शून्य भुखमरी के लक्ष्य को प्राप्त करना केवल सरकार या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि इसके लिए पूरे समाज और हर नागरिक के सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है। जब हम भोजन का सम्मान करेंगे और पर्यावरण के अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाएंगे, तभी एक स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध भविष्य का निर्माण संभव हो सकेगा।

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं — छठी देवी मां कात्यायनी माता

माँ की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे — मां कात्यायनी की आराधना से मिलता है शत्रु-विजय, साहस और जीवन के कष्टों से मुक्ति

— प्रधान संपादक: संजय कुमार बाठला | सह संपादक: पिंकी कुंडू

भूमिका: नवरात्रि का छठा दिवस — साहस, शक्ति और संकल्प शारदीय नवरात्र के छठे दिन मां दुर्गा के छठे स्वरूप मां कात्यायनी की आराधना की जाती है। मां कात्यायनी को साहस, शक्ति और शत्रुओं पर विजय की देवी कहा जाता है। भक्तों का विश्वास है कि मां कात्यायनी की पूजा से जीवन में आ रही बाधाएं दूर होती हैं, मनोबल बढ़ता है और परिवार में सुख-समृद्धि आती है।

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक, टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) और ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख साझा प्रबंधन मंडल की ओर से आप सभी को शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं।

>"माँ की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे यही कामना है हमारी।"

मुख्य तथ्य: मां कात्यायनी कौन हैं? तथ्य विवरण

नाम कात्यायनी — कात्यायन ऋषि की पुत्री

स्वरूप चार भुजाओं वाली, सिंह पर विराजमान, तेजस्वी और भव्य

वाहन सिंह

हथियार खड्ग, कमल, अभयमुद्रा और वरदमुद्रा

रंग लाल / सुनहरी आभा

ग्रह बृहस्पति (गुरु) से संबंध

दिन नवरात्रि का छठा दिन — षष्ठी

प्रिय भोग शहद, केसर, गुड़ और मधु

मुख्य बिन्दु 1: पौराणिक कथा — कैसे हुई मां कात्यायनी की उत्पत्ति? पौराणिक कथाओं के अनुसार, महर्षि कात्यायन ने मां भगवती की घोर तपस्या की थी। मां ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि वे उनके घर पुत्री रूप में जन्म लेंगी। दूसरी कथा के अनुसार, देवताओं के तेज से मां दुर्गा के इस स्वरूप की उत्पत्ति हुई — जिनका उद्देश्य महिषासुर जैसे दैत्यों का वध करना था।

मां कात्यायनी ने महिषासुर का वध कर देवताओं को भय से मुक्त किया। इसलिए इन्हें महिषासुर मर्दिनी भी कहा जाता है।

कथा का सार: जब अधर्म बढ़ता है, तो मां कात्यायनी साहस और शक्ति बनकर भक्तों की रक्षा करती हैं।

मुख्य बिन्दु 2: आराधना और पूजा विधि

1. पूजा की तैयारी: सुबह ब्रह्म मुहूर्त में स्नान कर, पीले या लाल वस्त्र धारण कर पूजा स्थल को गंगाजल से शुद्ध करें।

2. मां का आवाहन: मां कात्यायनी की मूर्ति या चित्र को लाल फूल, अक्षत, कुमकुम, हल्दी और चंदन अर्पित करें।

3. प्रिय भोग: मां को शहद, गुड़, केसर और मिठाई अर्पित करें। छठे दिन मधु (शहद) का भोग विशेष फलदायी माना जाता है।

4. दीप और आरती: घी का दीप जलाएं, धूप दिखाएं और दुर्गा सप्तशती, कात्यायनी मंत्र और आरती का पाठ करें।

5. व्रत: छठे दिन व्रत रखकर मां की आराधना करने से विशेष फल मिलता है।

मुख्य बिन्दु 3: मां कात्यायनी के मंत्र

बीज मंत्र:

> ॐ कात्यायनायै नमः

ध्यान मंत्र:

> चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।

> कात्यायनी शुभं दद्याद्देवी दानवघातिनी॥

सरल मंत्र:

> ॐ देवी कात्यायनै नमः

मां के मंत्र का 108 बार जाप करने से मन की बेचैनी दूर होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है और जीवन में शुभ फल मिलते हैं।

मुख्य बिन्दु 4: मां कात्यायनी की कृपा से क्या मिलता है?

- साहस और आत्मविश्वास: डर, चिंता और नकारात्मकता दूर होती है।
- शत्रु-विजय: जीवन की बाधाओं और विरोधियों पर विजय मिलती है।
- विवाह सुख: अविवाहित कन्याओं के लिए मां कात्यायनी की पूजा विशेष रूप से शुभ मानी जाती है। गोपियों ने भी श्रीकृष्ण को पति रूप में पाने के लिए मां कात्यायनी की पूजा की थी।
- रोग मुक्ति: शारीरिक और मानसिक रोगों से मुक्ति मिलती है।
- धन और समृद्धि: मां की कृपा से परिवार में सुख-शांति और धन-धान्य बढ़ता है।

मुख्य बिन्दु 5: छठे दिन का विशेष महत्व — भक्तों के लिए संदेश मां कात्यायनी की पूजा सिर्फ धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन में साहस, संयम और संकल्प का प्रतीक है। मां हमें सिखाती हैं कि विपत्ति के समय घबराना नहीं, बल्कि धैर्य और साहस से सामना करना है।

परिवहन क्षेत्र के चालक, ऑपरेटर, श्रमिक और सभी कर्मवीरों के लिए मां कात्यायनी की आराधना का संदेश है — सुरक्षित यात्रा, सच्ची सेवा और सबकी भलाई।

निष्कर्ष: मां की शरण में सबका कल्याण आइए, इस शारदीय नवरात्र के छठे दिन मां कात्यायनी की आराधना करें और प्रार्थना करें कि मां सबके जीवन से कष्ट दूर करें, सबको साहस, स्वास्थ्य और समृद्धि प्रदान करें।

जय मां कात्यायनी!

जय माता दी!

— संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू, सह संपादक
परिवहन विशेष - RNI DELHIN/2023/86499



मुख्यमंत्री के माता को मंत्री ,विधायक, सांसद तथा लोगों ने नेमरा पहुंचकर दी श्रद्धांजलि





कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन के पैतृक गांव नेमरा में आज बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। केन्द्रीय मंत्री, मंत्री, विधायक, मेयर, पूर्व मंत्री, पूर्व विधायक, विभिन्न राजनीतिक दलों के वरिष्ठ नेतागण, अधिकारी सहित बड़ी संख्या में आमलोग पहुंचे और मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की माता स्व. रूपी सोरेन की तस्वीर पर पुष्पांजलि कर श्रद्धसुमन अर्पित किया, तत्पश्चात मुख्यमंत्री से मिलकर गहरी संवेदनाएं प्रकट की। इस दौरान नेमरा गांव में शोक और संवेदनाओं का माहौल रहा।

मुख्यमंत्री से मिलने वालों में केन्द्रीय मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी, झारखंड के मंत्री दीपक विरूआ, विधायक संजय सिंह यादव, विधायक आलोक सोरेन, विधायक अमित कुमार यादव, रांची की मेयर श्रीमती रोशनी खलखो, पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुबोध कांत सहाय, पूर्व मंत्री हेमलाल मुर्मू, पूर्व मंत्री मिथिलेश ठाकुर, पूर्व विधायक विनोद सिंह, पूर्व विधायक लक्ष्मी टुडू, पूर्व विधायक अकील अख्तर, पूर्व विधायक निजामुद्दीन अंसारी, पूर्व विधायक नारायण दास, पूर्व विधायक ताला मरांडी, बिहार के पूर्व विधायक ललन कुमार, सहित भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, झारखंड लोक सेवा के अधिकारीगण, भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारीगण टाटा ग्रुप के अधिकारीगण, खिलाड़ी, रांची नगर निगम क्षेत्र के पार्षदगण व आमजनों ने नेमरा पहुंचकर दिवंगत रूपी सोरेन जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

गुरू सिंह सभा एवं झारखंड बुद्ध सोसाइटी के सदस्यों ने मुख्यमंत्री से मुलाकात की और उनकी माता के निधन पर शोक संवेदना प्रकट करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए सर्वधर्म प्रार्थना की।

झारखंड हाईकोर्ट ने बांग्लादेशी महिला को सुधारगृह में भेजने का आदेश दिया

बांग्लादेशी एम्बेसी को पत्र भेजा गया है ज़बाब लंबित है

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड हाईकोर्ट ने हजारीबाग डिटेंशन सेंटर में बंद बांग्लादेशी महिला को जल्द प्रोबेशन होम में शिफ्ट करने का निर्देश दिया है. महिला को आपराधिक मामले में सजा पूरी करने और बरी किए जाने के बावजूद हिरासत में रखे जाने का मामला हाईकोर्ट पहुंचा है.

इसी दौरान महिला के साथ कथित यौन शोषण का मामला भी सामने आया. कोर्ट ने महिला की स्थिति को देखते हुए इसे डिटेंशन सेंटर से दूसरी जगह शिफ्ट करने के राज्य सरकार के प्रस्ताव पर जल्द कार्रवाई करने को कहा है. साथ ही महिला को बांग्लादेश वापस भेजने की प्रक्रिया में हुई प्रगति की जानकारी भी मांगी है. इस मामले की अगली सुनवाई 19 नवंबर को होगी.

हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति सुजीत नारायण प्रसाद की अध्यक्षता वाली खंडपीठ में मामले की सुनवाई हुई. प्रार्थी के अधिवक्ता अंकित अपूर्व ने ईटीवी भारत को बताया कि उन्होंने अदालत में इंटरलोक्यूटरी एप्लीकेशन दाखिल कर महिला को तत्काल डिटेंशन सेंटर से हटाने की मांग की थी. उन्होंने अदालत को बताया कि जिस कमरे में महिला के साथ कथित यौन शोषण हुआ, उसी जगह उसे रखा जाना उचित नहीं है. ऐसी स्थिति में महिला की मानसिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव को भी समझने की जरूरत है. इसके बाद राज्य सरकार ने महिला को प्रोबेशन होम में शिफ्ट करने की बात कही, जिस पर अदालत ने शीघ्र कार्रवाई करने का निर्देश दिया.



सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने केंद्र सरकार के अधिवक्ता से पूछा कि महिला को बांग्लादेश वापस भेजने के लिए अब तक क्या कदम उठाए गए हैं. इस पर केंद्र की ओर से बताया गया कि बांग्लादेशी एंबेसी को इस संबंध में पत्र भेजा गया है लेकिन अब तक वहां से कोई जवाब नहीं मिला है. इस पर अदालत ने बांग्लादेशी एंबेसी से बातचीत कर मामले का समाधान निकालने का सुझाव दिया. साथ ही केंद्र सरकार से इस दिशा में अब तक की गई कार्रवाई की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा.

हाईकोर्ट ने राज्य सरकार से झारखंड के डिटेंशन सेंटरों और सरकार तथा गैर-सरकारी संगठनों की ओर से संचालित महिला शेल्टर होम की स्थिति पर भी रिपोर्ट मांगी है. राज्य सरकार ने सुनवाई के दौरान बताया कि झारखंड में चार डिटेंशन सेंटर हैं. अदालत ने इन केंद्रों की स्थिति और महिला शेल्टर होम से संबंधित जानकारी अगली सुनवाई तक उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है.

इस मामले में 5 अक्टूबर को हुई सुनवाई के दौरान प्रार्थी के अधिवक्ता अंकित अपूर्व ने अदालत को बताया था कि विदेशी महिला अपनी सजा की अवधि वर्ष 2021 में ही पूरी कर चुकी थी. इसके बावजूद उसे कभी जेल तो कभी डिटेंशन सेंटर में रखा गया. अधिवक्ता के अनुसार, इसी दौरान महिला के साथ तीन पुलिसकर्मियों द्वारा कथित तौर पर यौन शोषण किए जाने का मामला सामने आया. मामले में डालसा की रिपोर्ट के आधार पर राज्य सरकार ने अदालत को बताया था कि संबंधित तीनों पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है और उनके खिलाफ प्राथमिकी भी दर्ज कराई गई

पंचायत और नगर निकाय चुनाव: फरवरी में प्रकाशित होगी अंतिम मतदाता सूची, 26 अक्टूबर से घर-घर सर्वेक्षण



मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: ओडिशा में पंचायत और नगर निकाय चुनावों के लिए स्वच्छ, निष्पक्ष और त्रुटिरहित मतदाता सूची तैयार करने के उद्देश्य से 26 अक्टूबर से 7 नवंबर तक घर-घर सर्वेक्षण किया जाएगा। राज्य निर्वाचन आयुक्त मधुसूदन पाढ़ी ने बताया कि विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) के दौरान जिन मतदाताओं के नाम सूची से कट गए हैं, वे आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत कर अपना नाम दोबारा जुड़वा सकेंगे। वहीं, अपात्र मतदाताओं के नाम हटाने की भी व्यवस्था रहेगी।

निर्वाचन आयोग के अनुसार, जनवरी में मतदाता सूची का प्रारूप प्रकाशित किया जाएगा। इसके बाद दावे और आपत्तियां दर्ज कराने के लिए 20 दिन का समय दिया जाएगा। आयोग का लक्ष्य 10 फरवरी तक अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित करना है।

21 सितंबर को SIR की प्रक्रिया के बाद भारत निर्वाचन आयोग की मतदाता सूची के आधार पर राज्य निर्वाचन आयोग यह सर्वेक्षण कराएगा। पंचायत चुनाव के लिए प्रत्येक वार्ड में एक मतदान केंद्र बनाने की योजना है। इसके तहत विधानसभा चुनाव के लगभग 39,000 मतदान केंद्रों को पुनर्गठित कर करीब 91,000 बूथ बनाए जाएंगे। नगर निकाय क्षेत्रों में लगभग 6,000 बूथ होंगे। जरूरत पड़ने पर इनकी संख्या और बढ़ाई जा सकती है। चुनाव प्रक्रिया के तहत शहरी क्षेत्रों में EVM से, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में बैलेट पेपर के माध्यम से मतदान कराया जाएगा।

सर्वेक्षण दल में बूथ स्तर के अधिकारी (BLO), आंगनवाड़ी कार्यकर्ता (AWW), जलसाथी, स्वच्छसाथी और आशा कार्यकर्ता शामिल होंगे। पंचायत कार्यपालक अधिकारी (PEO), BLO के सुपरवाइजर, सहायक निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी (AERO) और निर्वाचक पंजीकरण अधिकारी (ERO) पूरी प्रक्रिया की निगरानी करेंगे।

राज्य निर्वाचन आयोग ने ओडिशा के लोगों से सर्वेक्षण के दौरान सहयोग करने की अपील की है। नाम जोड़ने और हटाने के लिए अलग-अलग फॉर्म।

सर्वेक्षण के दौरान छूटे हुए पात्र मतदाताओं के नाम जोड़े जा सकेंगे और मतदाता सूची में संशोधन भी किया जा सकेगा। इसके लिए दावा फॉर्म नंबर 16 भरना होगा। वहीं, किसी नाम को हटाने के लिए आपत्ति फॉर्म नंबर 17 जमा करना होगा। इस नई व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि एक ही परिवार के सभी मतदाताओं को एक ही मतदान केंद्र पर मतदान करने की सुविधा मिल सके।

पंचवटी का अलौकिक दृश्य देख दर्शक हुए गदगद

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस 2 में सीता हरण, सूर्पनखा अंग भंग, शबरी मिलन की लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। विशेष विकसित तकनीकी के प्रयोगों से पहाड़ ,झरने, नदी ,बादल, बिजली का कड़कड़ाना , पक्षियों का चहकना, सुंदरबन, आदि के प्राकृतिक दृश्य को दिखाया गया । पंचवटी के अलौकिक दृश्य का अवलोकन कर दर्शक गदगद हो गए। पंचवटी में सजीव जीव जंतु व पक्षियों को देख दर्शक उत्साहित हो गए। मुख्य अतिथि के रूप सांसद प्रवीण खंडेलवाल, विधायक पवन शर्मा व भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग उपस्थित हुए। प्रवीण खंडेलवाल ने कहा कि श्री राम हम सब के प्रेरक हैं हमें उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। सतीश गर्ग ने कहा कि श्रेष्ठतम प्रेरणा स्रोत है शबरी मिलन प्रसंग। हमें इस प्रसंग से समरसता का अनुसरण करने को मिलता है। अध्यक्ष अशोक गर्ग व सलाहकार अनिल यादव ने पर्यावरण संरक्षण में सहयोग हेतु अपील की। कार्यक्रम में देवराज, चंदन शर्मा, प्रदीप गोयल, संदीप गुप्ता, प्रवीण कुमार सिंह, राकेश सरीन, संजय गर्ग, संदीप खंडेलवाल, राहुल गुप्ता, हर्षित खंडेलवाल, राजेंद्र प्रसाद, प्रदीप शर्मा, लखन कुशवाहा, उपस्थित रहे।



धर्मेंद्र प्रधान ने राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों पर अवैध पार्किंग रोकने के लिए मुख्यमंत्री से किया आग्रह

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर: संबलपुर के सांसद धर्मेंद्र प्रधान ने गुरुवार को मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी को पत्र लिखकर राष्ट्रीय और राज्य राजमार्गों पर अवैध पार्किंग रोकने का आग्रह किया है। उन्होंने राजमार्गों पर अवैध पार्किंग के कारण बढ़ रही सड़क दुर्घटनाओं पर चिंता व्यक्त की है। धर्मेंद्र प्रधान ने पत्र में कहा कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर सुरक्षित यात्रा करना प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। इसके बावजूद विभिन्न स्थानों पर राजमार्गों के किनारे और सड़कों पर अवैध रूप से वाहनों को खड़ा किया जा रहा है। इससे सड़क दुर्घटनाएं हो रही हैं और लोगों की जान जा रही है।उन्होंने इस समस्या के लिए जिम्मेदार कंपनियों, परिवहनकर्ताओं और वाहन चालकों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है। साथ ही, खनन कंपनियों के लिए राजमार्गों से दूर ऑफ-हाईवे होल्डिंग यार्ड बनाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया है, ताकि भारी वाहनों को राजमार्गों पर अनधिकृत रूप से खड़ा न करना पड़े।

इसके अलावा, धर्मेंद्र प्रधान ने पत्र में उल्लेख किया है कि अवैध रूप से पार्क किए गए वाहनों के खिलाफ धारा 72 के तहत कार्रवाई करते हुए उन्हें जब्त किया जाना चाहिए। उन्होंने राजमार्गों पर सुरक्षित यातायात सुनिश्चित करने के लिए इस समस्या पर प्रभावी कदम उठाने का आग्रह किया है।



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023